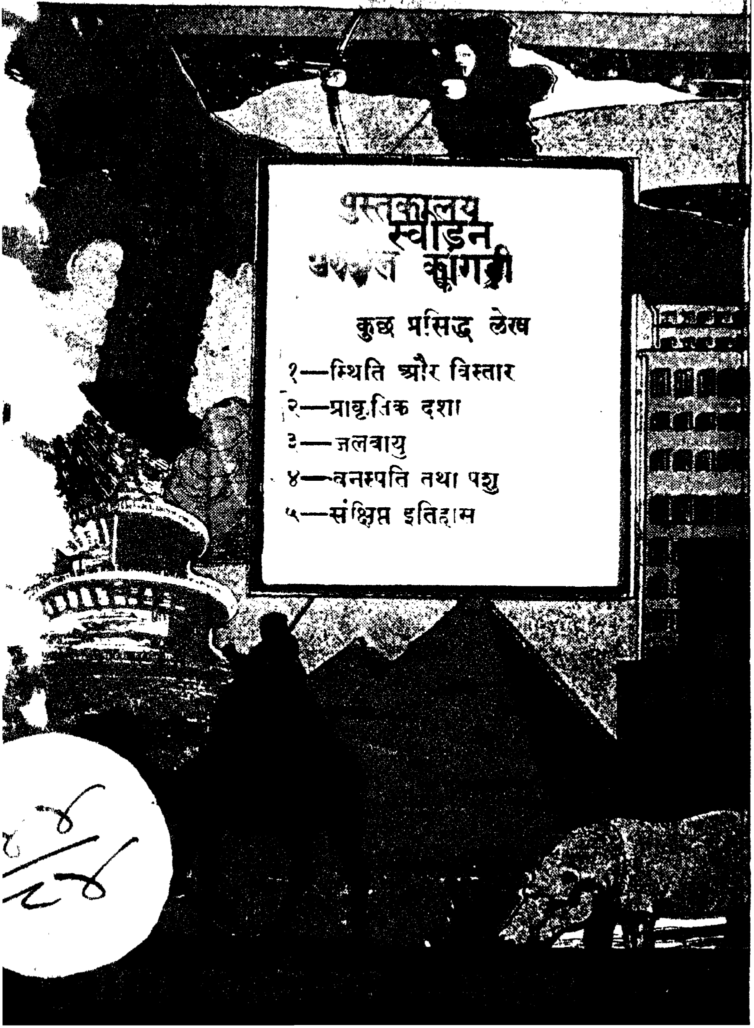
…श दर्शन

स्वीडन



स्वीडन

कुछ प्रसिद्ध लेख

अक्टूबर १९४१] # देश-दर्शन [कार्तिक १९९८

(पुस्तकाकार सचित्र मासिक)

वर्ष २] ## स्वीडन [संख्या ४

सम्पादक

पं० रामनारायण मिश्र, बी० ए०

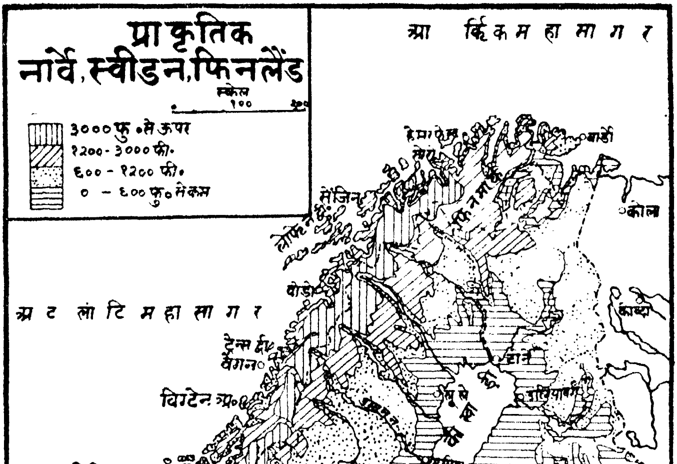
प्रकाशक

भूगोल कार्यालय, इलाहाबाद

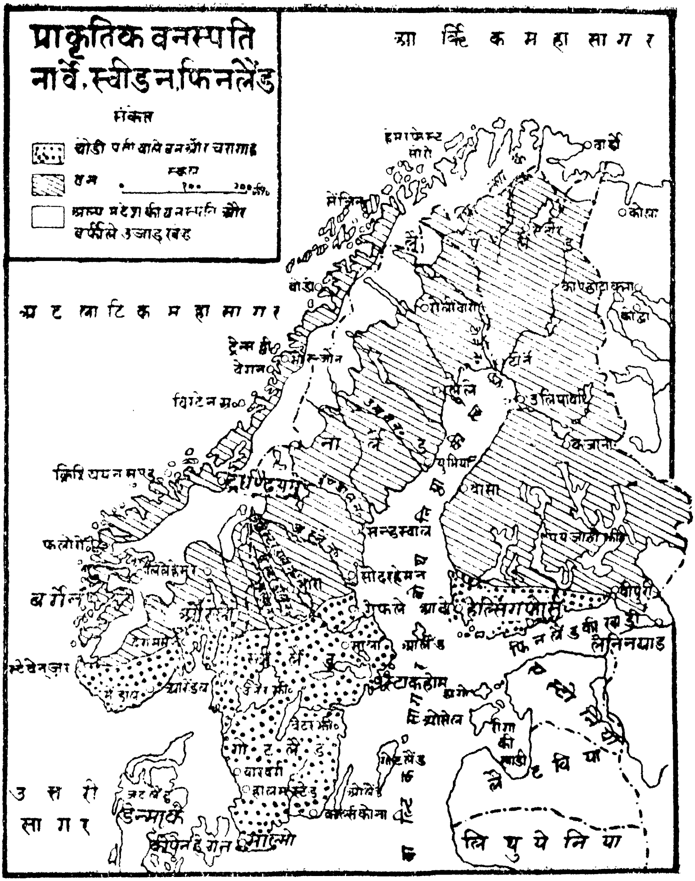
Annual Subs. Rs. 4/-
Foreign Rs. 6/-
This Copy As -/6/-

वार्षिक मूल्य ४)
विदेश में ६)
इस प्रति का ।=)

विषय-सूची



प्राकृतिक
नार्वे, स्वीडन, फिनलैंड
स्केल
100
3000 फु० से ऊपर
1200-3000 फी०
600-1200 फी०
0 - 600 फु० से कम
आ र्कटिक म हा सा ग र
अ ट लां टि म हा सा ग र
उ त्त री
सा ग र
कोला
बोडो
बर्गेन
फलोरो
स्टेवेनजर
क्रिश्चियनसुन्ड
स्टाकहोम
गोटलैंड
फिनलैंड की खाड़ी
लेनिनग्राड
रीगा की खाड़ी
ले ट वि या
लि थु ये नि या
जटलैंड
डेन्मार्क
मालमो
कार्ल्सकोना



प्राकृतिक वनस्पति
नार्वे, स्वीडन, फिनलैंड
संकेत
वन
आर्कटिक महासागर
अटलांटिक महासागर
उत्तरी सागर
डेन्मार्क
लेनिनग्राड
स्टाकहोम
लैटविया
लिथुएनिया

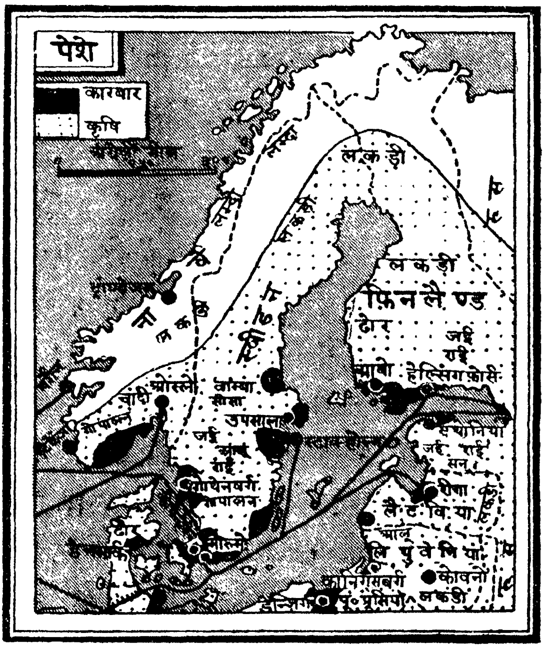
स्थिति

स्थिति तथा विस्तार

स्वीडन उत्तरी योरुप का एक स्वतंत्र राज्य है। यह स्कैण्डीनेविया का एक भाग है। इस देश की लम्बाई ६६० मील और सबसे अधिक चौड़ाई २५० मील है। इस देश का क्षेत्रफल १७३,१५४ वर्ग मील है। इसके सीमा की लम्बाई ६,१०० मील है। नार्वे सीमा की लम्बाई १०३० मील, फिनलैंड सीमा की ३३३ मील और स्वीडन के तट की लम्बाई ४,७३७ मील है। यह देश ५६° उत्तरी अक्षाँश से लेकर ६८° उत्तरी अक्षांश तक और ११·५° पूर्वी देशान्तर से २४° पूर्वी देशान्तर तक फैला हुआ है। स्वीडन के उत्तर में लैपलैंड, फिनलैंड का कुछ भाग और नार्वे है, दक्षिण और दक्षिण-पूर्व में बाल्टिक सागर, पूर्व में फिनलैंड, बोथनिया की खाड़ी और पश्चिम में नार्वे तथा उत्तरी सागर का कुछ भाग है।

स्कैंडीनेविया के लम्बे और धीमे ढाल में स्वीडन देश है। इस ओर यह पठार धीरे धीरे नीचा होता गया है। फिर बाल्टिक के कड़े पत्थर वाले निचले प्रदेश में यह एक दम गिर गया है। यही समुद्र के नीचे नीचे चल कर फिनलैंड में फिर प्रगट हो गया है। यह निचला

प्रदेश हिम कालीन कणों से बहुत गहरा ढका पड़ा है और हिम कालीन झीलों से जड़ा हुआ है। हिम नदियां द्वारा बनाई हुई चूने की पहाड़ियाँ भी बहुत हैं। अधिक दक्षिण में कड़े पत्थर का अभाव है। यहां पर यह प्रदेश मध्य योरुप के मैदान का एक अंग है।

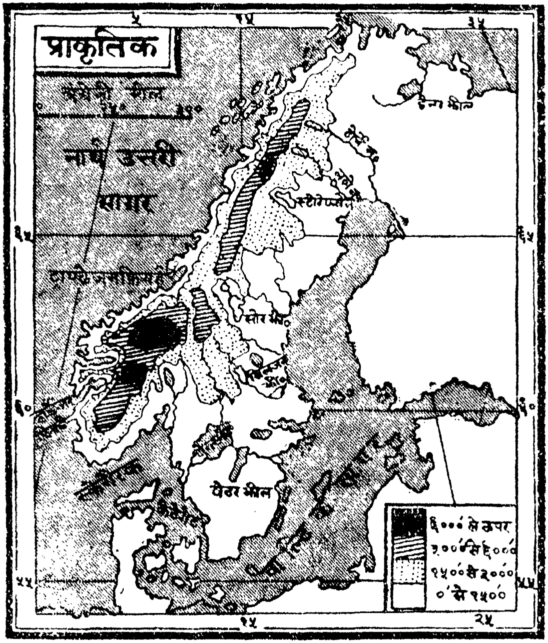




प्राकृतिक दशा

स्वीडन एक प्राचीन पहाड़ी श्रेणी की हड्डी का बना है। इस प्राचीन पहाड़ी की चोटी नार्वे-स्वीडन की सीमा है। स्वीडन देश तीन (नारलैंड, स्वेलैंड, और गोटलैंड) प्रदेशों में बटा है। प्राकृतिक रूप से स्वीडन चार भागों में विभाजित किया जा सकता है। १—उत्तरी पहाड़ तथा झीलों का प्रदेश जिसमें समस्त नारलैंड और स्वोलैण्ड का पश्चिमी भाग है। २—मध्यवर्ती स्वीडन का निचला प्रदेश ३—स्मालैण्ड ऊंचे प्रदेश जो दक्षिण और दक्षिण-पूर्व स्थित है। ४—स्काने के मैदान जो प्रायद्वीप के धुर दक्षिण में हैं। पहला भाग सब से बड़ा तथा सबसे ऊँचा है उसमें बहुत सुन्दर दृश्य पाये जाते हैं। स्वीडन के पर्वतों की सर्वोच्च चोटियां नार्वे-स्वीडन सीमा पर हैं जिनमें बहुत सी चोटियाँ ६ हजार फुट से अधिक ऊँची हैं। केब्नेकैसे की चोटी ६,९६५ फुट, लूले आल्फ की चोटी ६९७१ फुट ऊँची है। सुलित जाल्मा की चोटी ६,१५८ फुट अरेकूतन की चोटी ४६५६ फुट, हेलाग्स्फ जाल चोटी ५८९० फुट ऊँची है। उत्तर की ओर की नदियां लम्बी संकरी उच्च प्रदेश की

झीलों द्वारा मिली हैं। यह झीलें समुद्र के धरातल से ९०० फुट से १३०० फुट की ऊँचाई तक में स्थित हैं।



योरुप के देशों में झीलों की संख्या के अनुसार स्वीडन की गणना फिनलैंड के बाद है। स्वीडन की झीलों का क्षेत्रफल १४५०० वर्गमील है। स्वीडन की झीलें



मध्यवर्ती निचले प्रदेश में स्थित हैं। स्वीडन की उत्तरी नदियां बनों में होकर बहती हैं और समुद्र में प्रवेश करने के पहले लम्बी स्चुअरी बनाती हैं। तोर्ने नदी अपनी सहायक नदियों के साथ फिनलैंड की सीमा बनाती है। तोर्ने की लम्बाई २२७ मील है। तोर्ने नदी तोर्ने ट्रास्क का पानी बहाकर समुद्र में प्रवेश करती है।

कालिक्स नदी की लम्बाई २०८ मील है। इस नदी में बहुत से प्रपात हैं। इसकी समानान्तर रमूले नदी है। लूले नदी की प्रधान शाखा की लम्बाई १६२ मील है। स्टोरा लेले के नीचे योरुप का सबसे बड़ा तथा परम सुन्दर प्रपात है। यह प्रपात १३० फुट ऊँचा है। दक्षिणी पर्वतों की घाटी में कई एक सुन्दर प्रपात हैं जिनमें तान-फोर्स प्रसिद्ध है। लूले के दक्षिण में पाइट नदी १६१ मील और स्केलेफ्टे नदी २०५ मील लम्बी है। स्केलेफ्टे नदी होर्न फवान और स्टोर फवान प्रदेश के २०५ वर्ग मील का पानी बहा कर ले जाती है। उनमे नदी की लम्बाई २३८ मील है। उनमे की सहायक नदी विंडेल है। यह नदियां कई झीलों के बीच होकर बहती हैं जिनमें स्टोर अमन झील भी है जिसका क्षेत्रफल ६४ वर्ग

मील है। अंगेर्मन नदी की लम्बाई २७६ मील है इसमें हालिंग्स का प्रपात है। इंदल नदी की लम्बाई १९६ मील और जूसनन नदी की लम्बाई २०३ मील है। दल झील २३० मील बहने के बाद सिल्जन झील में गिरती है। जिसका क्षेत्रफल ११० बर्ग मील है। तोर्ने नदी में १७००० बर्ग मील का पानी आता है और अंगरमेन नदी के बेसिन का क्षेत्रफल १२,५०० बर्ग मील है।

स्वीडन का निचला प्रदेश तटीय देश की भांति है। निचले प्रदेश में असंख्य झीलें तथा उपजाऊ मैदान हैं। निचले मैदान की झीलों में वेनर (२१४१ ब० मी०), वेटर (७३३ ब० मी०), मलार (४७० ब० मी०) और जेलभर (१०५ व० मी०) झीलें प्रसिद्ध हैं। इन झीलों का दृश्य बड़ा सुन्दर है। सब से सुन्दर झील मलार है जिसके समीप स्टाकहाम नगर बसा है। ग्रानूलाड़ स्वीडन का प्रसिद्ध पर्वतीय प्रदेश है। इस प्रदेश में खनिज सम्पत्ति बहुत है। स्मालैंड गोटलैण्ड के मध्य-वर्ती भाग में स्थित है। यह स्वीडन के ऊँचले प्रदेश का एक मुख्य भाग है। यह प्रदेश वेटर के दक्षिण की ओर है और दक्षिणी पश्चिमी समुद्र तट तक चला गया है।



इस प्रदेश की साधारण ऊँचाई ३०० फुट से अधिक है। पूर्वी भाग में इसकी उंचाई ६०० फुट है। इस प्रदेश की मुख्य चोटियाँ तोम्स्तावेकेन (११०५) और गाटसेन (११८८ फुट) हैं। इस प्रदेश में कोणधारी बन बहुत हैं परन्तु यहाँ की खेती लाभदायक है। स्कैने के मैदान में स्मालन्द के उच्च प्रदेश हैं।

स्वीडन में आधा देश बन से ढका है और मुख्य मुख्य पेशे बन से ही सम्बन्ध रखते हैं। यहाँ के पेड़ धीरे धीरे उगते हैं इसी कारण उनकी लकड़ी भी कड़ी और मूल्यवान होती है। स्वीडन की लकड़ी का अधिकांश भाग जर्मनी और ब्रिटेन के हाथ बेचा जाता है। पेड़ पतझड़ और सरदी की ऋतु में काटे जाते हैं और चिकनी बरफ पर घसीट कर उन्हें जमी हुई नदियों में घसीट कर इकट्ठा कर देते हैं।

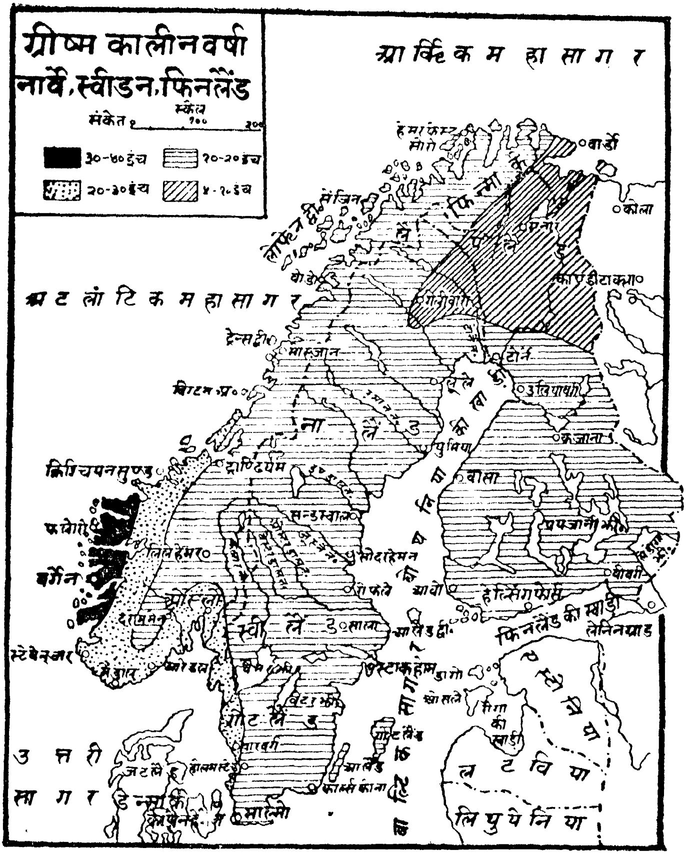
दक्षिणी स्वीडन में चिकनी मिट्टी पाई जाती है जिससे जई, जौ, राई, चुकन्दर और कुछ कुछ गेहूं पैदा होता है।

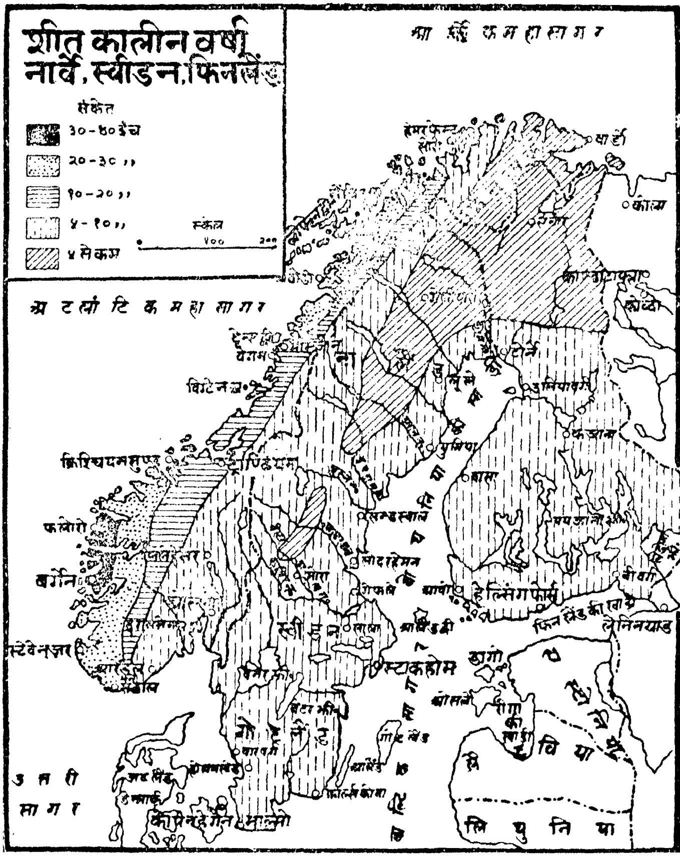
स्कैंडीनेविया का तट माल्मो के आसपास दक्षिण में २० वर्ष में १ फुट डूब रहा है और बोथनिया की खाड़ी के उत्तर में उठ रहा है। स्वीडन में कोयला और लोहा खूब पाया जाता है।

तट

स्वीडन का समुद्र तट ४७३७ मील लम्बा है। नार्वे के तटीय फियोर्ड की भांति स्वीडन का तटीय फियोर्ड भी है परन्तु स्वीडन के फियोर्ड कम गहरे तथा संख्या में कम हैं। स्वीडन तट के समीप नार्वे की भांति द्वीपों की एक जंजीर है। यह द्वीपीय जंजीर स्वीडन देश को समुद्र से अलग करती है। स्कागर्ड (द्वीपों की जञ्जीर) और स्वीडन के मध्य संकरी खाड़ियाँ हैं जिनमें जहाज़ चल सकते हैं।

स्टाकहोम के समीप द्वीपीय पेटी की चौड़ाई सब से अधिक (४५ मील) है। वहाँ का समुद्री दृश्य बड़ा सुन्दर है और अधिक उत्तर की ओर संकरा अलान्द हाफ है जो स्वेडिस चर्च तथा अलान्द द्वीप समूह के मध्य स्थित है। अलान्द हाफ फिनलैंड तक फैला हुआ है। द्वीपीय जञ्जीर ऊँची नीची तथा सुन्दर है। बाल्टिक सागर के द्वीपों में बन हैं परन्तु बोथनिया की खाड़ी तथा और दूसरे द्वीपों में बनस्पति नहीं है। अलान्द और गोटलैण्ड के द्वीप बड़े तथा प्रशंसनीय हैं।


ग्रीष्म कालीन वर्षा
नार्वे, स्वीडन, फिनलैंड
संकेत
स्केल
30-40 इंच
10-20 इंच
20-30 इंच
आर्कटिक महासागर
अटलांटिक महासागर
कोला
बर्गेन
ओस्लो
स्टाकहोम
आबो
हेलसिंगफोर्स
फिनलैंड की खाड़ी
लेनिनग्राड
माल्मो
उत्तरी सागर
लटविया
लिथुएनिया


शीत कालीन वर्षा
नार्वे, स्वीडन, फिनलैंड
संकेत
३०-४० इंच
२०-३० ,,
१०-२० ,,
५-१० ,,
५ से कम
स्केल
१००
२००
अटलांटिक महासागर
बर्गेन
स्टेवेन्जर
स्वीडन
स्टाकहोम
हेल्सिंगफोर्स
लेनिनग्राड
फिनलैंड की खाड़ी
लिथुनिया

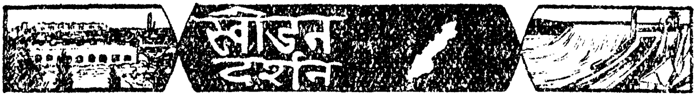
जलवायु

स्वीडन का १५ फीसदी भाग आर्कटिक वृत्त में है। स्वीडन के पर्वत इतने ऊँचे हैं कि सरदी काफी हो जाती है परन्तु इतने अधिक ऊँचे नहीं हैं कि वह उन गरम हवाई लहरों को रोक सकें जिनके कारण नार्वे की जलवायु गर्म हो जाती है। दक्षिणी और पूर्वी भाग में समुद्र हैं इसलिये रूस की सर्द हवायें फिनलैण्ड में प्रवेश करती हैं और जलवायु सर्द कर देती हैं। स्वीडन में फरवरी मास सबसे अधिल ठंडा होता है, उस समय सबसे कम ताप ३२° अंश से नीचे रहता है। फरवरी मास में स्टाकहोम का तापक्रम २५·७°, गोटेबोर्ग का ३०·४°, हमरंद का १०·६° रहता है। उस मास में लेप-लैंड के मध्यवर्ती भाग में सबसे अधिक जाड़ा पड़ता है। और करेस्वारोडा नामक स्थान का ताप ५·२° हो जाता है। उत्तर की ओर कुछ स्थानों में साल के प्रत्येक मास में पाला पड़ता है परन्तु करेस्वाराडो में पांच महीने का ताप बरफ जमने के अंश से ऊपर रहता है। जुलाई मास स्वीडन का सबसे अधिक गरम महीना है। जुलाई मास में गोटेबर्ग का ताप ६२·२°, स्टाकहोम का ६२°, हमरंद का ५९° और करेस्वाराडो का ५४·२ रहता है। स्वीडन में ग्रीष्म काल बहुत छोटा होता है परन्तु कभी कभी

लैपलैंड के करसजोक स्थान का ताप ८८° हो जाता है। करेस्बाराडो में साल में सबसे पहले दिन २७ अगस्त को और सबसे आखिरी दिन २५ जून को पाला पड़ता है। स्टाकहोम में साढ़े चार महीने और साउण्ड (खाड़ी) में ६ मास से अधिक समय तक पाला नहीं पड़ता है।

उत्तर की ओर अक्तूबर में बरफ गिरने लग जाती है और मई या जून मास में पिघलती है। दक्षिण तथा मध्यवर्ती भाग में नवम्बर में बरफ गिरनी आरम्भ होती है और अप्रैल मास में पिघलने लग जाती है। दक्षिण की झीलें साल में १०० दिन और उत्तर की साल में २०० दिन तक बरफ से जमी रहती हैं। जनवरी मास में कैटेगट में बरफ के तूदे फिसलने लग जाते हैं परन्तु बाल्टिक सागर के बरफ के तूदों से साउण्ड का मार्ग बन्द होता है। कभी कभी शीतकाल में जब बहुत सरदी पड़ती है तो साउण्ड बरफ से जम जाती है। बोथनिया का उत्तरी भाग नवम्बर से मई के मध्य तक बरफ से ढका रहता है। द्वीपों के मध्य बरफ जून तक जमी रहती है।

स्वीडन में ग्रीष्म काल भिन्न भिन्न भागों में भिन्न भिन्न होता है। करेस्बाराडो (६८ उत्तरी अक्षांश) में



२६ मई से १८ जुलाई तक सूर्य लगातार प्रकाशित रहता है। हमरंद में २३ घंटे का दिन और लुन्द में १७½ घंटे का दिन होता है। १६ जून से २७ जून तक हेर्नोसन्द में संध्या समय के प्रकाश के पश्चात् दिन हो जाता है।

स्वीदन में वर्षा उत्तर से दक्षिण की ओर धीरे धीरे अधिक होती जाती है। सबसे अधिक वर्षा दक्षिण-पश्चिम में होती है। इस प्रकार नारलैंड के उत्तर में १६·५ इंच सालाना वर्षा और दक्षिण में २२·५ इंच सालाना वर्षा होती है। बोरस वेटर झील और कटेगट के मध्य में है वहां साल में ३५ इंच वर्षा होती है। केरस्वारोडा में सालाना वर्षा का औसत १२·३ इंच है। ग्रीष्म काल में ताप ऊँचा और फरवरी से मार्च तक ताप सबसे नीचा रहता है। स्काने प्रान्त ४७ दिन साल में बरफ से जमा रहता है। उत्तर की ओर का प्रान्त साल में १४० दिन से १८० दिन तक बरफ से ढका रहता है। स्वेडिश हिमानियां १३५ व० मी० धरती ढके रहती हैं। उत्तर की ओर के बन कैसे, सरजेकजाको और सुलीटाम में हिमानी गिरती हैं। हेलगस्फजाल सब से दक्षिणी स्थान है जहां हिमानी गिरती है। यह स्थान ६२° उत्तरी अक्षांस पर स्थित है।

देश दर्शन

बनस्पति तथा पशु

बनस्पति के ध्यान से स्वीडन चार भागों में विभाजित किया जा सकता है (१) अल्पाइन प्रान्त (२) देवदार के बनों का प्रान्त (३) कोणधारी वृक्षों का प्रान्त (४) शफतालू के बनों का प्रदेश। अल्पाइन बनस्पति १६०० फुट अथवा अधिक ऊँचे पर्वतों पर उत्तर की ओर और ३००० फुट की ऊँचाई पर दक्षिण की ओर पाई जाती है। इस बनस्पति में झाड़ियों वाले पौदे मिलते हैं। रेण्डियर के लिये घास अथवा काई मिलती है। देवदार के बन उत्तर की ओर १० से २० मील तक चौड़े पाये जाते हैं, दक्षिण की ओर देवदार के सघन बन नहीं हैं। बनों में देवदार के अलावा और दूसरी कड़ी लकड़ियों के बन पाये जाते हैं। वेनर झील के उत्तर-पूर्व का प्रान्त कोणधारी वृक्षों के बनों से घिरा हुआ है। २५०० फुट की ऊँचाई से ३००० फुट की ऊँचाई तक कोणधारी वृक्ष मिलते हैं। ऐश, देवदार, नींबू, बलूत, मैपुल और एल्प के वृक्ष दक्षिण की ओर बहुत हैं। यह वृक्ष १६०० फुट की ऊँचाई के ऊपर नहीं पाये जाते हैं। कोणधारी बनों में बन में आग लगाने तथा लकड़ी



काटने वाले लोगों के कारण लकड़ी नष्ट हो जाती है। ओलैण्ड, स्केने और कटेगर प्रदेश में शाहबलूत के वन हैं और कहीं कहीं देवदार के वृक्ष भी मिलते हैं। खेतो के लिये धरती अधिक तोड़ लेने के कारण वन कम हो रहे हैं। कुछ फूल के पौदे भो पाये जाते हैं परन्तु अधिक शीत तथा बरफ के कारण फूल कम होते हैं।

पहाड़ी प्रदेश होने तथा सरदी के कारण स्वीडन में बहुत कम जंगली पशु हैं। खरगोश, एरमाइन (गलहरी की भांति का पशु) नीवला, लोमड़ी, गिलहरी आदि पशु बनों में बहुत हैं। एरमाइन से समूर मिलता है। रीछ की अब रखवाली की जाती है। उत्तर के बनों में रीछ, भेड़िया, लीक्स, ओल्वरीन आदि पशु मिलते हैं। इनके बालों से समूर मिलता है। ग्रीष्म ऋतु में स्वीडन में पक्षियों की अधिकता हो जाती है। समस्त स्वीडन में भांति भांति के रंग बिरंगे पक्षी पाए जाते हैं। आर्कटिक वृत्त में आर्कटिक प्रान्त की लोमड़ी तथा चूहे पाए जाते हैं। यह पशु बड़े बड़े झुण्ड बना कर चलते हैं और पक्षियों, घरेलू तथा बनैले पशुओं तथा मनुष्यों आदि पर जब टूट पड़ते हैं तो बड़े भयानक होते हैं। नदियों और

झीलों में मछलियां बहुत पाई जाती हैं। मछलियों में काड मछली सबसे अधिक प्रसिद्ध है। आर्कटिक सागर से ह्वेल तथा सील मछली लाई जाती है।

लैप प्रदेश का मुख्य जानवर रेण्डियर है। रेण्डियर का मांस तथा दूध खाया जाता है और चमड़ा के तम्बू बनाए जाते हैं। चर्बी जलाने के काम आती है। यह पशु टुण्ड्रा प्रदेश का मुख्य पशु है।



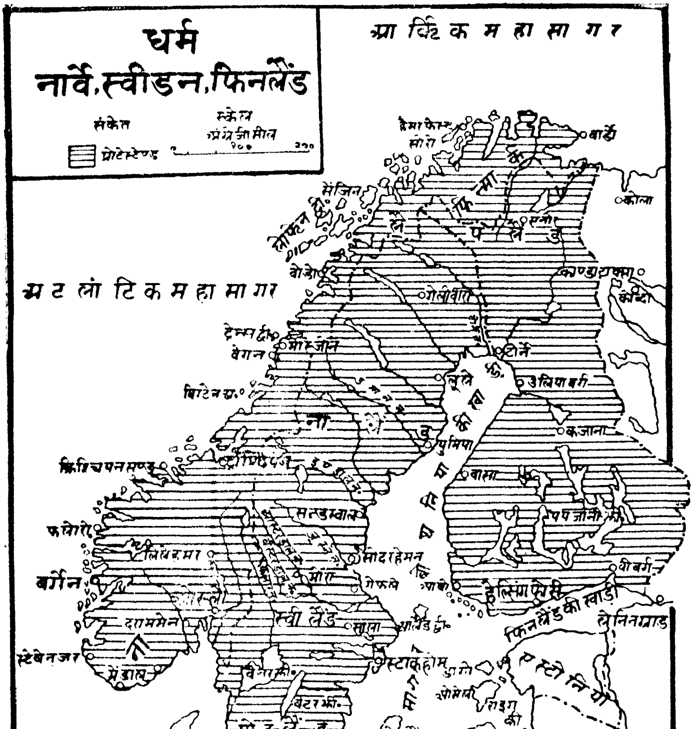
संक्षिप्त इतिहास

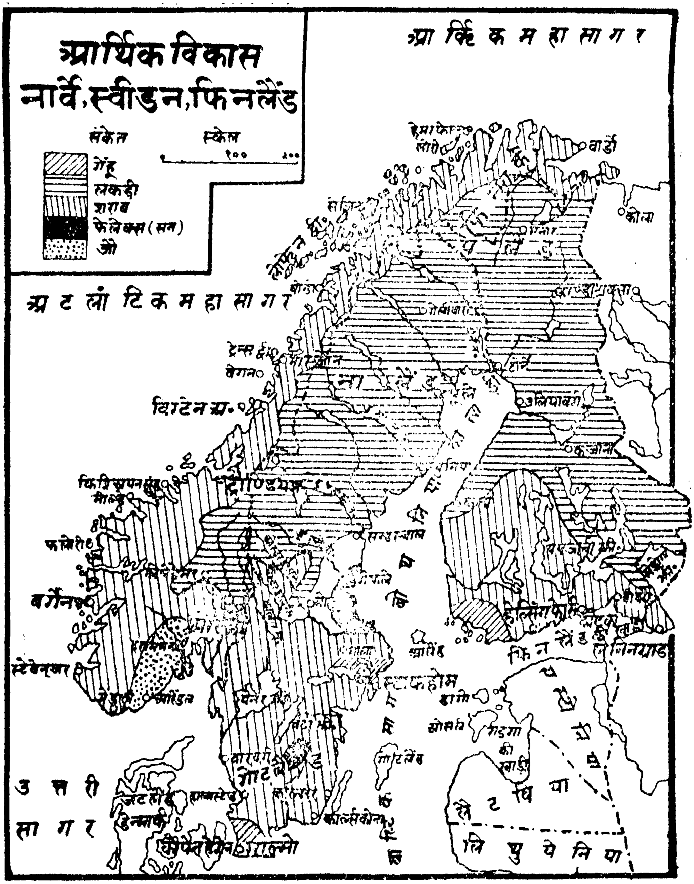
प्राचीन काल में सुईओन्स जाति राज्य करती थी। उसी जाति के नाम पर इस देश का नाम स्वीडन पड़ा है। सुईओन्स जाति के बाद गौटई जाति का राज्य स्वीडन पर हुआ। छठवीं सदी के इतिहास से पता चलता है कि स्वीडन के लोग फर और समूर का व्यापार करते थे। यही सामान व्यापारियों के द्वारा रोम पहुंचाये जाते थे।

स्वीर वंश के राजों ने स्वीडन की प्राचीन राजधानी उप्पसल की नींव डाली थी।

दसवीं सदी में स्वीडन के इतिहास का वर्णन समयानुकूल मिलता है। उस समय समुन्द का पुत्र एरिक उप्पसल में राज्य करता था। १०६० ई० में स्टीनकेल राजा हुआ। १०६६ ई० में उसकी मृत्यु हो गई तो स्वीडन से गृह युद्ध छिड़ गया। उसके बाद १०८१ ई० में इंगे और इल्स्टन आदि राजाओं का शासन स्वीडन पर रहा। स्वेरकेर ११३४-११५५ ई० तक स्वीडन का राजा रहा जिसने स्वेड्स और गोथ दोनों जातियों को मिलाया। उसके बाद एरिक नवम ११५० से ११६० ई० तक राजा रहा। ११६४ ई० में

चार्ल्स सप्तम के समय में उप्पसल के आर्क विशप की नींव पड़ी। उसके बाद १२०८ ई० में अर्ल विर्गेर प्रसिद्ध राजा हुआ। उसने १२६६ ई० तक राज्य किया। अर्ल विर्गेर ने ही स्टाकहोम नगर की नींव डाली थी। इस राजा ने राज्य में बहुत से सुधार किये और अपनी शक्ति को बढ़ाया। उसके बाद मगनुस लडुलास ने १२७५-१२९० ई० तक राज्य किया। इन दोनों राजाओं ने स्वीडन में कई स्वतन्त्र छोटे राज्य स्थापित किये। १३१९ ई० में स्वीडन के कुछ भाग पुनः मिला कर संयुक्त राज्य बनाया गया। इसी काल में स्वीडन में बहुत से वीर उत्पन्न हुए। तेरहवीं सदी के अन्त में स्वीडन में प्रान्तीय नियमों से व्यवस्था बनाई गई। १३१९ ई० में स्वीडन और नार्वे के राज्य सर्वप्रथम मिलाये गये। उसी साल हैकन पञ्चम स्वीडन का राजा चुना गया। उसके बाद स्वीडन के निवासियों ने १३६५ ई० में मेकलेनबर्ग के अल्बर्ट को अपना राजा बनाया। १३५९ ई० में स्वीडन की प्रथम प्रतिनिधियों की सभा बुलाई गई। उसके बाद दूसरे राजा अल्बर्ट ने १३७१ ई० में राज्याभिषेक की शपथ उठाई। १३८८ ई०


धर्म
नार्वे, स्वीडन, फिनलैंड
संकेत
स्केल
अंग्रेजी मील
प्रोटेस्टेण्ट
आर्कटिक महासागर
अटलांटिक महासागर
उत्तरी सागर
नार्वे
स्वीडन
फिनलैंड
बाल्टिक सागर
बोथनिया की खाड़ी
फिनलैंड की खाड़ी
लेनिनग्राड
एस्टोनिया
लैटविया
लिथुयेनिया
गोटलैंड
ओलैंड
स्टाकहोम
हेलसिंगफोर्स
ओस्लो
बर्गेन
स्टेवेनजर
ट्रोन्धेम
बोडो
कोला
टोर्ने
ऊलियाबर्ग
कजाना
लूले
वासा
ताम्मेरफोर्स
वीबर्ग
गोटलैंड
मालमो
कोपनहेगन
डेनमार्क
जटलैंड
कार्लसक्रोना
रीगा की खाड़ी



आर्थिक विकास
नार्वे, स्वीडन, फिनलैंड
संकेत
स्केल
१०० २००
गेंहू
लकड़ी
फेलिक्स (सन)
आर्कटिक महासागर
अटलांटिक महासागर
उत्तरी सागर
बर्गेन
स्टाकहोम
लेनिनग्राड
कोला
वार्डो
डेन्मार्क
ले ट वि या
लि थु ये नि या



में स्वीडन के निवासियों की प्रार्थना से डेन्मार्क के मार्गरेट ने अल्बर्ट को निकाल बाहर किया और १३९७ ई० में कोल्मार नामक स्थान पर नार्वे-स्वीडन और डेन्मार्क का संयुक्त राज्य बनाया गया।

१३९७ ई० में पामेरानिया का एरिक स्वेडन का राजा चुना गया। मारगरेट महारानी की मृत्यु १४१२ ई० में हुई उसके बाद एरिक राजा हुआ। एरिक ने स्वीडन को अपने परतंत्रता में रखना चाहा परन्तु वहां के किसानों ने बलवा कर दिया। राष्ट्रीय आन्दोलन में सभी स्वेडिश लोगों ने भाग लिया और १४३५ ई० में वहाँ एक शासन सभा बनाई गई। वह सभा अबतक चल रही है और बीच में कभी भंग नहीं हुई। उसके बाद डेनमार्क के राजा कभी स्वीडन के अधिकारी रहे और कभी वहां की प्रजा वहां की शासक रही। १५२० ई० में डेनमार्क के राजा क्रिश्चियन द्वितीय ने स्वीडन को जीता और स्टाकहोम के राष्ट्रीय दल के प्रधान नेताओं को फाँसी पर लटका दिया। १४७७ ई० में उपसल में स्वीडन का प्रथम विश्वविद्यालय स्थापित किया गया।

स्कैण्डीनेविया के संयुक्त राज्य का राजा कोपेनहेगेन

में रहता था। वह डेनमार्क में एक कैदी की भांति रक्खा गया था। १५१६ ई० में वह लूबेक भाग कर गया जहां उसे बहुत से मित्र मिल गये। १५२० ई० में वह कोलमार के समीप स्वीडन में फिर उतरा और शीघ्र ही उसे विदित हो गया कि स्टाकहोल्म के हत्याकाण्ड में उसके पिता मार डाले गये हैं। वह दलरना गया और वहाँ उसने किसानों की सेना एकत्रित किया। १५३६ ई० में लूबेक और स्वीडन के मध्य संधि हो गई। गस्टवस वासा ने स्वीडन में रोमन नियम का संचालन किया। उसने खान, खेती तथा व्यापार की ओर अधिक ध्यान दिया।

१५६० ई० में गस्टवस वासा की मृत्यु हो गई तो उसका बड़ा पुत्र एरिक चौदहवाँ गद्दी पर बैठा। एरिक ने १५६८ ई० तक राज्य किया। १५७७ ई० में वह कारागार में मरा।

१५६८ ई० में जोहन तृतीय गद्दी पर बैठा और १५६२ ई० तक राज्य करने के बाद मरा। जोहन के मरने के बाद पोलैंड के सिगिस्मद नामक व्यक्ति के हाथ में डेनमार्क का राज्य चला गया। सिगिस्मद कैथलिक चर्च के नौकरों का भक्त था। उसका चचा चार्ल्स कार्य-



परायण उत्साही तथा परिश्रमी पुरुष था। १५६४ ई० में सिगिस्मद् पोलैण्ड चला गया परन्तु कौंसिल के सदस्यों के बुलाने पर १५६८ ई० में वह फिर पोलिश सेना के साथ स्वीडन गया। उसे वहां पराजय हुई और फिर पोलैण्ड वापस चला गया। कौंसिल के सदस्य पकड़े गये और उन्हें प्राण दण्ड दिया गया। १६०७ ई० में चार्ल्स का राज्याभिषेक हुआ। १६११ ई० में चार्ल्स का देहान्त हुआ और उसके स्थान पर उसका पुत्र गस्टवस अडाल्फस राजा बना।

गस्टवस एडोल्फस का जन्म १५६४ ई० में हुआ था गस्टवस ने स्वीडन को शक्तिशाली बनाने के लिये इङ्गलैंड रूस, फिनलैण्ड और एस्टोनिया आदि देशों से संधि किया। गस्टवस ने अपनी कौंसिल को वचन दिया था कि वह उसकी सलाह के बिना किसी देश से संधि अथवा युद्ध न करेगा। उसने स्वीडन के व्यापार को उन्नति देने का भीषण प्रयत्न किया। १६२४ ई० में गस्टवस ने उप्पसल के विश्वविद्यालय को बड़ा रुपया दान रूप में मिला।

गस्टवस अडोल्फस अपने समय का एक बड़ा बीर

साहसी पुरुष था। वह एक बड़ा योद्धा तथा सैनिक नेता था। उसने पोलैंड से संधि का विचार किया परन्तु संधि न हुई और पोलैंड से युद्ध छिड़ गया। जब कि गस्टवस पोलैंड के साथ युद्ध कर रहा था उसी समय जर्मनी में तीस साला युद्ध का आरम्भ हो गया। रोमन साम्राज्य का सम्राट कैथलिक लोगों की सहायता कर रहा था। उसका मुख्य जनरल वालेन्स्टीन था। साम्राज्य की सेनायें प्रूशा पोलैंड की सहायता के लिये भेजी गई थीं। जर्मन राज्यों ने डेनमार्क और स्वीडन के राजाओं से सहायता मांगी क्योंकि डेनमार्क और स्वीडन के सभी राजा उनके सम्बंधी थे। फ्रान्स की सरकार कैथलिक मत को मानती थी परन्तु राजनैतिक कारणों से वह प्रोटेस्टेण्ट धर्म की सहायता करना चाहता था। उस समय फ्रान्स की बागडोर रैशयू के हाथ में थी। इंगलैंड की सरकार भी फ्राँसीसी सरकार की भांति अपनी नोति चला रही थी।

जर्मन राजाओं के बुलाने पर डेनमार्क का राजा चार्ल्स चतुर्थ युद्ध में उतरा परन्तु उसे पराजय हुई। उसकी हार के बाद वालेन्स्टीन की सेना बाल्टिक सागर पर पहुँच गई थी। गस्टवस स्कैण्डीनेविया अथवा बाल्टिक सागर

में युद्ध नहीं करना चाहता था वह जर्मनी के अन्दर ही लड़ना चाहता था। १६३० ई० में वह अपनी १३ हज़ार सेना लेकर पामेरेनिया पहुंचा। जनवरी १६३१ ई० में फ्रांस ने गस्टवस से संधि किया। सितम्बर १६३१ ई० में गस्टवस की सेना ने वालेन्स्टीन की सेना को ब्रिटेन फील्ड में हराया। उसके बाद स्वीडन की सेना को कई स्थानों पर विजय प्राप्त हुई। गस्टवस ने मेञ्ज और फ्रैंक फर्ट में अपना दर्बार किया और म्यूनिक पहुँचा। १६३० ई० में पराजय के बाद वालेन्स्टीन हटा दिया गया। शीघ्र ही वह फिर एक बड़ी सेना लेकर मैदान में पहुँच गया। ६ नवम्बर १६३२ ई० को लुत्ज़ेन की लड़ाई में गस्टवस मारा गया। स्वीडन ने गस्टवस के समय बड़ी उन्नति किया। उसकी धाक चारों ओर बैठ गई थी।

गस्टवस अडोल्फस के पश्चात् उसकी पुत्री क्रिश्चियाना गद्दी पर बैठी वह छोटी थी इस लिये राज्य का प्रबंध एक्सेल आक्सेनटीर्ना के हाथ में था। १६३३ ई० में फ्रांस से पुनः संधि हुई और फरवरी १६३४ ई० में वालेन्स्टीन की हत्या कर दी गई जिससे स्वीडन को बड़ा

लाभ हुआ। १६४३ ई० में स्वीडन की सेना ने जेटलैंड पर धावा मारा और क्रिश्चियन चतुर्थ को संधि करनी पड़ी जिसके फलस्वरूप स्वीडन को जाम्टलैंड, हर्जेदालेन गोटलैंड, ओसेल आदि स्थान मिले। वेस्टी वेस्टफीलिया की संधि में स्वीडन को पामेरेनिया, विस्मार, ब्रेमेन और वर्डेन आदि जर्मन स्थान मिले। १६६६ ई० में क्रिश्चियन की मृत्यु रोम में हुई।

उसके पश्चात् काउण्ट पैलेटिनेट कार्ल गस्टाव चार्ल्स दशम के नाम से गद्दी पर बैठा। उसने १६५४ से १६६० तक राज्य किया। चार्ल्स को पोलैंड और डेनमार्क से युद्ध करना पड़ा। उसने वार्सा पर अधिकार कर लिया था। डेनमार्क ने स्वीडन को स्काने, हालैंड, ब्लेकिंजे, बोर्नहोम, बोहूस्लान और ट्राण्डियमस्लान आदि स्थान दिये थे।

१३ फरवरी १६६० ई० को चार्ल्स दशम की मृत्यु हुई। उसके बाद चार्ल्स ग्यारहवाँ गद्दी पर बैठा और १६९७ ई० तक राजा बना रहा।

चार्ल्स ग्यारहवां जब गद्दी पर बैठा तो वह केवल चार वर्ष का था। उसे शत्रुओं का सामना करना था।



उसके समय में डेनमार्क और पोलैंड से युद्ध हुआ। स्वीडन ने जर्मनी, डेनमार्क और नार्वे के जिन भागों पर अधिकार कर लिया था उनमें से बहुत से स्थान स्वीडन के हाथ से निकल गये। चार्ल्स ग्यारहवां के मरने पर चार्ल्स बारहवाँ गद्दी पर बैठा उस समय उसकी अवस्था केवल १५ वर्ष की थी।

स्वीडन की व्यवस्थापिका सभा ने घोषणा किया कि चार्ल्स राज्य प्रबंध करने योग्य है इस लिये किसी दूसरे को राज प्रबंध देखने की आवश्यकता नहीं है।

उस समय पोलैंड, रूस और डेनमार्क स्वीडन के विरुद्ध एक हो गये थे। डेनमार्क के साथ १७०० ई० में संधि करने के बाद चार्ल्स ने रूस पर धावा मारा और रीगा पर अधिकार जमा लिया। १७०१ ई० में चार्ल्स दक्षिण की ओर चला और रूसी सेना को हराता हुआ वह पोलैंड पहुंचा। १७०२ ई० में उसने वार्सा तथा क्राकाव पर अधिकार कर लिया। जब कि चार्ल्स पोलैंड के युद्ध में लगा था रूस का राजा पिटर ज़ार एक के बाद दूसरे नगर पर अधिकार करता रहा। चार्ल्स पोलैंड के राजा अगस्टस को समाप्त करके तब रूस की

ओर जाना चाहता था। १७०६ ई० में अगस्टस ने पोलैंड की गद्दी को छोड़ दिया। चार्ल्स बारहवें के समय स्वीडिश सेना की धाक समस्त योरुप में जमी थी और योरुप के ३० राजदूत चार्ल्स के दर्बार में थे। चार्ल्स और रोमन सम्राट से झगड़ा छिड़ने की सम्भावना थी परन्तु हालैंड तथा इंगलैंड के कारण युद्ध रुक गया। होलोवज़ेन की विजय के पश्चात् चार्ल्स ने नीपर नदी पार किया और रूस की सेना को हराता हुआ आगे बढ़ता गया। यूक्रेन में जब चार्ल्स ने आक्रमण किया तो उस वर्ष वहां भीषण सरदी पड़ी जिसके कारण हज़ारों स्वीडिश सेना नष्ट हो गई। चार्ल्स ने पोल्टावा का घेरा डाला और १ जुलाई सन् १७०६ ई० को चार्ल्स की सेना ने हथियार रख दिये।

रूसी युद्ध के कारण स्वीडन का मान योरुप में घट गया। रूसी सेना ने बाल्टिक प्रान्तों पर अधिकार जमा लिया। चार्ल्स बारहवें के कहने पर तुर्क लोगों ने रूस के साथ युद्ध आरम्भ किया परन्तु उससे रूस को किसी प्रकार का लाभ नहीं हुआ। दिसम्बर १७१४ ई० में चार्ल्स टर्की से स्वीडन लौट कर आया। उसके बाद



चार्ल्स ने स्वीडन की सीमा को दृढ़ बनाया और डेनमार्क के राजा को संधि करने पर विवश किया।

१७१९ में स्वीडन की संधि हनोवर के साथ हुई जिसके अनुसार स्वीडन ने ब्रेमेन और वर्डेन हनोवर को दिया और उसके बदले में उसे धन मिला। १७२१ ई० में नीस्टाड नामक स्थान पर रूस से संधि हुई जिसमें स्वीडन ने लिवोनिया, एस्टोनिया, इंगरिया और फिनलैंड का कुछ भाग छोड़ दिया। उत्तरी तथा पश्चिमी फिनलैंड स्वीडन को दिया गया।

१७२० ई० में फ्रैड्रिक प्रथम स्वीडन का राजा हुआ। फ्रैड्रिक के समय में स्वीडन के जहाजी बेड़े की उन्नति हुई। १७३१ ई० में ईस्ट इंडिया कम्पनी का निर्माण हुआ। फ्रैड्रिक गद्दी पर नहीं बैठा। राज्यशासन का काम काउण्ट हार्न के हाथ में था। जब रूस ने स्वीडन के भीतरी कार्यों में दखल देना आरम्भ किया तो हार्न ने १७२६ ई० में इंगलैंड, फ्रान्स और रूस से संधि किया। हार्न का विरोध किया गया और हैटर दल शक्तिशाली हुआ। यह दल रूस के प्रतिकूल था। वह रूस से युद्ध करना चाहता था। १७४१ ई० में रूस के

साथ युद्ध आरम्भ हुआ परन्तु स्वीडिश सेना को परास्त हुई। १७४२ ई० में अबो स्थान पर संधि हुई और अडोल्फस फ्रैड्रिक स्वीडन का राजा चुना गया। १७४६-४७ ई० में स्वीडिश पार्लियामेंट की बैठक हुई जिसमें रूसी प्रभाव की आलोचना की गई। हैट लोग पुनः शक्ति में आगये। १७४७ ई० में प्रशा के साथ संधि की गई।

फ्रैडिक प्रथम की मृत्यु १७५१ ई० में हुई उसके बाद अडोलफस १७५१-७१ ई० तक राजा रहा। वह राजा अपनी स्त्री के आधीन था इस कारण उससे और उसके कौंसिल से झगड़ा होता रहा। स्वीडन की पार्लियामेन्ट में दो मुख्य दल कैप्स और हैट्स लोगों के थे। यह दो दल आपस में लड़ते झगड़ते रहते थे। १७७१ ई० में अडोलफ फ्रैड्रिक की मृत्यु हो गई।

जब गस्टवस तीसरे के पिता का स्वर्गवास हुआ तो वह पेरिस में था। जब वह लौटा तो उसने देखा कि हैट्स और दरबारी लोगों को फ्रांस से रुपया मिल रहा था। कैप्स लोग रूस और इङ्गलैण्ड से रुपया पा रहे थे। कैप्स और हैट्स दोनों दलों की शक्ति लगभग बराबर थी। १९ अगस्त १७७२ ई० को स्वीडन के राजा ने

अपनी सेना की सहायता से अपने विरोधियों को गिरफ़्तार कर लिया। १७८८ ई० में गस्टवस ने रूस के साथ युद्ध आरम्भ किया।

स्वीडन का राजा स्वयम् लड़ाई पर गया। होगलैण्ड में समुद्री युद्ध हुआ। १७८९-९० ई० में रूस के साथ कई समुद्री युद्ध हुये। स्वेन्स्कसुन्द के युद्ध में १७९० ई० में स्वीडन की विजय हुई। अगस्त मास में रूस के साथ संधि कर ली गई। युद्ध के कारण स्वीडन का कोष खाली हो गया था जिससे देश की भीतरी दशा शोचनीय हो गई थी। २९ मार्च १७९२ ई० को गस्टवस की मृत्यु हो गई।

१७९२ ई० में गस्टवस अडोलफस चतुर्थ स्वीडन का राजा हुआ। राज्य का प्रबन्ध उसके चचा ड्यूक चार्ल्स के हाथ में था। १७९६ ई० में अडोलफ ने राज्य शासन की बागडोर अपने हाथ में ली। देश की आर्थिक दशा खराब थी इस कारण बिस्मार नगर मेकलेनबर्ग को ठीके पर दे दिया गया। १८०५-७ ई० के मध्य जो संयुक्त दल नैपोलियन के विरुद्ध बनाया गया। उसमें स्वीडन ने भाग लिया इसलिये पामेरेनिया और स्ट्रालैण्ड उसके

हाथ से जाते रहे। टिल्सिट की संधि के अनुसार सम्राट अलिक्ज़ण्डर और नैपोलियन ने स्वीडन पर आक्रमण करने का निश्चय किया। फिनलैंड में रूसी सेना से स्वेडिश सेना का युद्ध हुआ। १८०८ ई० में स्वीडन की सेना फिनलैण्ड में लौट गई। १३ मार्च १८०९ ई० को अडोल्फस की मृत्यु हो गई।

पहली मई को प्रान्तीय सरकारों की बैठक हुई और उन्होंने स्वीडन के लिये नया विधान तयार कराने का निश्चय किया। राजा को सलाह देने के लिये एक मंत्री-मंडल की स्थापना की गई। मंत्री मण्डल का निर्माण राजा के ही हाथ में रक्खा गया। जैसे ही विधान बन कर तयार हुआ चार्ल्स तेरहवाँ स्वीडन का राजा स्वीकार कर लिया गया।

१८०९ ई० में रूसी युद्ध उत्तर की ओर बढ़ा और स्वेडिश सेना की दो स्थानों पर हार हुई। फिनलैंड और अलान्द स्थान स्वीडन के हाथ से निकल गये। १८१० ई० में कोर्वो का राजकुमार बेर्नाडाटे स्वीडन का उत्तराधिकारी चुना गया। यह राजा वर्तमान स्वेडिश राज्य घराने का जन्मदाता है।

१८११ ई० में नैपोलियन ने रूस को हराने का निश्चय किया। उसने १८१२ ई० में स्वेडिश परराष्ट्र नीति में पूर्ण परिवर्तन करने का निश्चय किया। उसने स्वेडिश पामेरेनिया पर अधिकार जमा लिया। इङ्गलैंड और रूस चाहते थे कि नार्वे स्वीडन के आधीन हो जावे क्योंकि डेनमार्क नैपोलियन का मित्र बना था। जब रूस में फ्रांसीसी सेना की पराजय हुई तो चार्ल्स जान उत्तरी सेना का सेनापति बना। उसके साथ स्वेडिश सेना भी थी। १८१४ ई० में पामेरेनिया के बदले नार्वे स्वीडन को मिला।

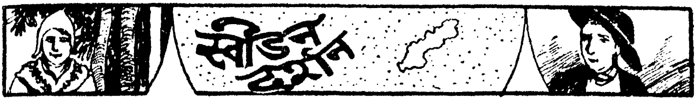
१८१५ ई० में नार्वे और स्वीडन दोनों देशों की वैधानिक सभाओं ने नार्वे-स्वीडन के संयुक्त राष्ट्र की स्वीकृति दी।

उसके बाद नार्वे और स्वीडन के शान्त काल का आरम्भ हुआ और आर्थिक तथा कारखाने वाली क्रांतियां हुईं। चार्ल्स चौदहवाँ पुराने विचार का था वह नये सुधारों को कम पसंद करता था। १८४० ई० में राज्य की कौंसिल बदल दी गई और राज्य में भिन्न भिन्न

शासक विभाग बना दिये गये। १८२२ ई० में गोथ नहर का शेष भाग पूरा किया गया।

चार्ल्स चौदहवें के बाद उसका पुत्र आकर प्रथम १८४४-५६ ई० तक स्वीडन का राजा रहा। उसका शासनकाल सुधार के लिये प्रसिद्ध है। १८४७ ई० में गरीबों के लिये नियम बनाया गया। उसके बाद आने जाने के मार्गों, सड़कों और रेलवे लाइनों का कार्य आरम्भ हुआ। १८४८ ई० में समस्त योरुप में क्रांति हुई। इस लिये स्टाकहोम की गलियों में भी कुछ बलवा हुआ। स्कैन्डीनेविया संयुक्तराज्य बनाने के लिये विद्यार्थियों की कई सभाएँ हुईं परन्तु कोई विशेष विधान नहीं बन सका। क्रीमियन युद्ध में स्वीडन और नार्वे तटस्थ राष्ट्र बने रहे। १८५५ ई० में स्वीडन नार्वे की संधि इङ्गलैण्ड फ्रांस के साथ हुई। पेरिस की संधि के साथ साथ रूस, फ्रांस और इङ्गलैण्ड के साथ अलग अलग संधियाँ की गईं। रूस ने बचन दिया कि वह अलान्द द्वीपों की किलाबन्दी न करेगा।

चार्ल्स चौदहवें के पश्चात् चार्ल्स पन्द्रहवां स्वीडन का राजा हुआ और उसने १८५९-७२ ई० तक शासन



किया। उसके समय में जर्मन-डेनिश युद्ध १८६३-६४ ई० तक हुआ। स्वीडन ने इस युद्ध में केवल इतना ही भाग लिया कि स्वेडिश प्रजा ने डैनिश सेना में स्वयम् सेवक बन कर कार्य किया।

समाज में परिवर्तन होने के कारण स्वीडन में नए विधान की आवश्यकता प्रतीत हुई इसलिये १८६५-६६ ई० में नया विधान बनाया गया जिसके अनुसार इँगलैंड की भांति वहां भी बड़ी और छोटी दो सभाएँ बनाई गईं। जब इन दोनों सभाओं में मतभेद होता था तो संयुक्त बैठक होती थी और संयुक्त रूप से सदस्यों का मत लिया जाता था।

सितम्बर १८७२ ई० में चार्ल्स पन्द्रहवें की मृत्यु हुई उसके पश्चात् आस्कर द्वितीय राजा हुआ। उसने १९०७ ई० तक राज्य किया। आस्कर द्वितीय के समय में स्वीडन-नार्वे का संयुक्त राष्ट्र भंग हुआ। आस्कर ने नार्वे का मुकुट २६ अक्तूबर १९०५ ई० को उतार दिया।

१८८१ ई० में मज़दूर बच्चों के लिये नियम बनाया गया। १८८९ ई० में काम करते हुये मज़दूरों को चोट पहुंचने के सम्बन्ध में नियम बनाया गया।

आस्कर द्वितीय के पश्चात् गस्टाव पञ्चम् १९०७ ई० में गद्दी पर बैठा। वही स्वीडन का राजा है। इस राजा के समय में स्वीडन में आधुनिक परिवर्तन हुये हैं। भांति भांति के सुधार भी राज्य में किये गये हैं। मजदूरों का आन्दोलन भी बड़े जोरों का चला, हड़तालें हुईं। १९१२ ई० में मजदूरों की रक्षा के लिये एक कानून बनाया गया। बुढ़ापे में पेंशन देने का नियम १९१३ ई० में बनाया गया।

उसके बाद सिराजिवो को दुर्घटना हुई और प्रथम महासमर छिड़ा। १९१४ ई० में स्टाकहाम में ३० हज़ार किसान एकत्रित हुये और उन्होंने राष्ट्र की रक्षा का समस्त भार अपने ऊपर लेने की प्रार्थना अपने राजा से किया। स्वीडन के राजा ने अपनी प्रजा को संतोषजनक उत्तर दिया। नर्म दल के मन्त्री मंडल ने इस्तीफा दिया और हजाल्मार हमर्सक जोल्ड। को मन्त्रीमण्डल बनाने का आदेश राजा ने दिया। इस नये मन्त्री मण्डल में के० ए० वालेनबर्ग परराष्ट्र मन्त्री बनाया गया।

नए मन्त्रीमण्डल की छोटी सभा में बहुमत था। युद्ध के आरम्भ होने पर आय पर युद्ध कर लगाया



गया। उस समय इस बात की बड़ी चर्चा थी कि स्वीडन और जर्मनी की गुप्त संधि है इसलिये स्वीडन की सरकार ने तटस्थता की घोषणा की।

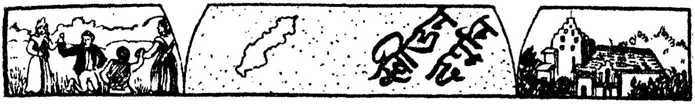
जब इँग्लैण्ड ने जर्मनी का ब्लाकेड (घेरा) किया तो बहुत कुछ स्वीडन का माल इँगलैण्ड में रोक लिया गया। १९१६ ई० में स्वीडन में एक कानून बनाया गया जिसके अनुसार बिना सरकार की सम्मति के लड़ाके राष्ट्रों को किसी प्रकार का बचन नहीं दिया जा सकता था। उस समय जब ब्रिटेन ने स्वीडन के जहाज रोके तो स्वीडन ने भी बाल्टिक सागर में जो भिन्न भिन्न राष्ट्रों के जहाज थे उन्हें रोक दिया। इँगलैंड रूस को सामान भेजना चाहता था इसलिये स्वीडन और इँगलैंड में समझौता हुआ जिसके अनुसार इँगलैंड से कुछ सामान रूस जाने लगा और पश्चिम की ओर से खाने पीने का सामान स्वीडन आने लगा। जब स्वीडन ने ओरेसुन्द नहर का मार्ग बन्द कर दिया तो स्वीडन डेन्मार्क और नार्वे की सरकारों में अधिक घनिष्ट संबन्ध हो गया। इसी लिये माल्मो स्थान में स्वीडन डेन्मार्क और नार्वे के राजाओं का सम्मेलन हुआ। १९१५ ई० में सर्व

प्रथम सबसे ऊँचा दर भोजन सामग्री का नियत किया गया।

७ जुलाई १६१६ ई० को तटस्थ व्यापार की घोषणा को फ्रान्स और इँगलैण्ड ने रद्द कर दिया। उस समय जर्मन यू-बोटों का घोर संग्राम चल रहा था। स्वीडन के २८० जहाज़ उस समय डुबाये गये थे और ब्रिटिश बन्दरगाहों पर छीने हुये जहाज़ों की भीड़ लगी थी। १६१७ ई० की क्रान्ति के पश्चात् इङ्गलैण्ड ने रूस को सामान भेजना बन्द कर दिया।

युद्ध के पहले स्वीडन में ६१ प्रतिशत कोयला इङ्गलैण्ड से आता था और स्वीडन से इङ्गलैण्ड लोहा आदि जाता था परन्तु मार्ग की कठिनाइयों के कारण लोहा इङ्गलैंड जाना बन्द हो गया, साथ ही साथ स्वीडन में केवल २६ प्रतिशत कोयला आने लगा। उस समय स्वीडन को कोयला जर्मनी से जाता था और स्वीडन से जर्मनी को लोहा जाता था।

आयात में कठिनाई पड़ने के कारण स्वीडन को भोजन सामग्री के सम्बन्ध में कड़े नियम बनाने पड़े। अक्तूबर १६१६ ई० में चीनी का नियंत्रण किया गया।



१६१७ ई० में रोटी का नियंत्रण किया गया और लोगों को रोटी के कार्ड बांटे गये। समस्त नाज का व्यापार स्वीडन की सरकार ने अपने हाथ में कर लिया।

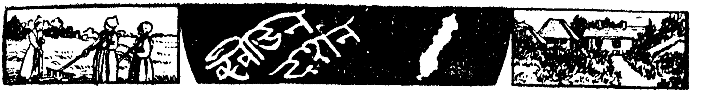
१६१७ ई० में स्वीडन की सरकार में परिवर्तन हुआ और नई सरकार बनाई गई जिसका प्रधान मंत्री स्वार्ज हुआ और परराष्ट्र मन्त्री अर्विड लिंडमन बनाया गया। उसके बाद फिर मन्त्रीमण्डल भंग हुआ और नये निर्वाचन के बाद प्रोफेसर निल एडेन ने मन्त्रीमंडल बनाया। वह स्वयम् प्रधान मन्त्री बना और हेलनेर परराष्ट्र-सचिव बनाया गया।

१६१८ ई० में फिनलैंड को स्वीडन ने एक स्वतंत्र राज्य स्वीकार किया। फिनलैंड की कानूनी सरकार को सैनिक सहायता की आवश्यकता थी फिर स्वीडन डर रहा था कि यदि वह फिनलैंड की सहायता करता है तो शायद उसे रूस के साथ युद्ध करना पड़े। जब अलान्द द्वीप में युद्ध पहुँचा तो स्वीडन ने अपनी जल सेना वहां भेजी। अलान्द निवासी स्वीडन के प्रति अपनी स्वामिभक्ति की घोषणा कर चुके थे। जब जर्मनी ने अलान्द द्वीप को (स्वेत फिनिश की सहायता रूसियों

के विरुद्ध करने के लिये) अपना अड्डा बनाया तो स्वीडन ने अपनी सेना वापस बुला ली।

स्वीडन के रेड क्रास सोसायटी ने गत महासमर में प्रशंसनीय कार्य किया है। राजकुमार चार्ल्स (स्वीडन के राजा का भाई) ने स्वयं सोसायटी में कार्य किया था। आस्ट्रिया, जर्मनी और रूस में सैनिक क़ैदियों को सहायता पहुँचाई गई। जर्मनी, आस्ट्रिया और दूसरे देशों के बच्चों तथा स्त्रियों को स्वीडन में रहने के लिये स्थान दिया गया। स्वीडन ने गतमहासमर में सहायतार्थ तीन करोड़ पैंसठ लाख क्रोनर खर्च किये।





आधुनिक युद्ध का स्वीडन

गत महासमर की भांति आधुनिक युद्ध में भी स्वीडन ने तटस्थता की घोषणा की है। यह बात बड़े महत्व की है कि लगभग गत १०० वर्षों से स्वीडन ने किसी प्रकार के युद्ध में भाग नहीं लिया है। वह सदैव तटस्थ रहता चला आया है। हाँ, उसकी सहानुभूति उसके पड़ोसी राज्यों से अवश्य रही है। रूस स्वीडन का प्राचीन काल से ही बैरी है। जर्मनी के साथ उसकी सहानुभूति बहुत दिनों से चली आ रही है।

जब रूस ने फिनलैंड पर आक्रमण किया तो यह सम्भावना थी कि वह फिनलैंड का साथी बनेगा परन्तु उसने फिनलैंड की सहायता के लिये मित्र सेनाओं को भी मार्ग नहीं दिया।

गत महायुद्ध काल में जब जर्मनी का मित्र राष्ट्रों ने घेरा डाला तो स्वीडन का व्यापार जर्मनी के साथ बढ़ गया। पहले स्वीडन का लोहा इङ्गलैण्ड और जर्मनी दोनों देशों को जाता था परन्तु अब वहां का समस्त लोहा जर्मनी जाता है। स्वीडन से लकड़ी, लुब्दी आदि सामान भी जर्मनी तथा जर्मनी द्वारा अधिकार में किये हुये देशों को

जाता है। जर्मनी स्वीडन को भोजन सामग्री तथा कोयला देता है। स्वीडन जर्मन प्रभुत्व में है। वहां जर्मनी की नव-युग योजना में शामिल है। आज योरुपीय देशों की भांति वहां पर भी प्रत्येक आवश्यक वस्तु का नियंत्रण है।

जब जर्मनी ने नार्वे पर आक्रमण किया तो स्वीडन की स्थिति जटिल हो गई थी। परन्तु स्वीडन ने जर्मनी ऐसे बड़े शत्रु के आक्रमण से अपने को बचा लिया।

सन् १९४० ई० में स्वीडन और जर्मनी के मध्य जो संधि हुई है उसके अनुसार जर्मनी स्वीडन होकर अपनी सेना लेकर आ जा सकता है। आर्थिक तौर पर इस समय स्वीडन जर्मनी का एक अंग बना है।

स्वीडन अब तक युद्ध की तयारी बराबर कर रहा है। उसने अपनी सेना का खर्च १५ करोड़ क्रोनर से बढ़ा कर ढाई अरब कर दिया है। इसके सिवा आय कर द्वारा भी बहुत सा रुपया युद्ध के लिये इकट्ठा किया गया है। वहां की प्रजा ने अपनी सरकार की सहायता के लिये डेढ़ करोड़ क्रोनर दान दिया है।

इस बात का निर्णय करना बड़ा कठिन है कि स्वीडन



क्यों इतनी तयारी कर रहा है। कुछ भी हो परन्तु स्वीडन एक स्वतंत्र देश है वह अपने को युद्ध से अलग रखना चाहता है। जर्मनी को जो सुविधायें उसने दी हैं वह सब उसने अपनी जटिल परिस्थिति तथा लाभ के लिये दी हैं। इसी कारण आज हम देखते हैं कि वह अब भी एक स्वतंत्र राष्ट्र बना है।

स्वीडन की व्यवस्थापिका सभा में समाजवादियों का बहुमत है। स्पेन के मज़दूरों का जीवन योरुप में सबसे अधिक सुखमय है। समाजवादी प्रजातांत्रिक दल के नेता हैनसन स्वीडन के प्रधान मन्त्री हैं। वहां का पर-राष्ट्र सचिव गुनथेर है। यह दोनों महाशय जर्मनी से मेल रखना चाहते हैं। स्वीडन के वर्तमान नरेश गस्टाव पञ्चम हैं।

जन-संख्या

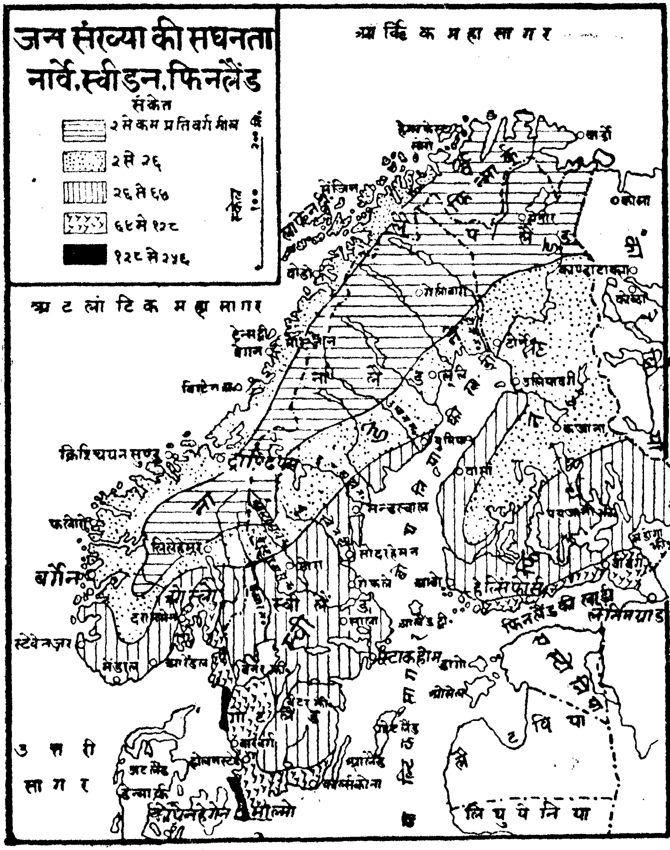
स्वीडन की जन-संख्या ६३ लाख है। जन गणना का हिसाब चर्चों के पादरियों के हाथ रहता है। साधारण जन गणना प्रत्येक दसवें वर्ष होती है। बाहर से आने वालों की संख्या गत महायुद्ध के समय अधिक बढ़ गई थी शेष वर्षों में विदेशी लोगों की संख्या कम रहती है। १६२० ई० में स्वेडन में ३,००६,२३३ स्त्रियां और २,८६८,२५६ मर्द थे। स्वीडन निवासी स्कैण्डीनैवियन जाति के हैं। १६२० की जन गणना में ३० हजार फिन और ७०,२०० लैप लोग भी शामिल थे।

स्वीडन में दक्षिण की ओर आबादी अधिक है। १६२६ ई० में मल्योहुसलान में प्रत्येक वर्ग मील में २६६ व्यक्ति रहते थे। नारलैंड में जन संख्या में बृद्धि अधिक हुई है। वहां पैदा होने वालों की संख्या मरने वालों की संख्या से ५१२ प्रति सहस्र अधिक हुई है। सबसे उत्तरी प्रान्त में सबसे कम लोग मरते हैं। विवाहित लोगों की संख्या कम है।

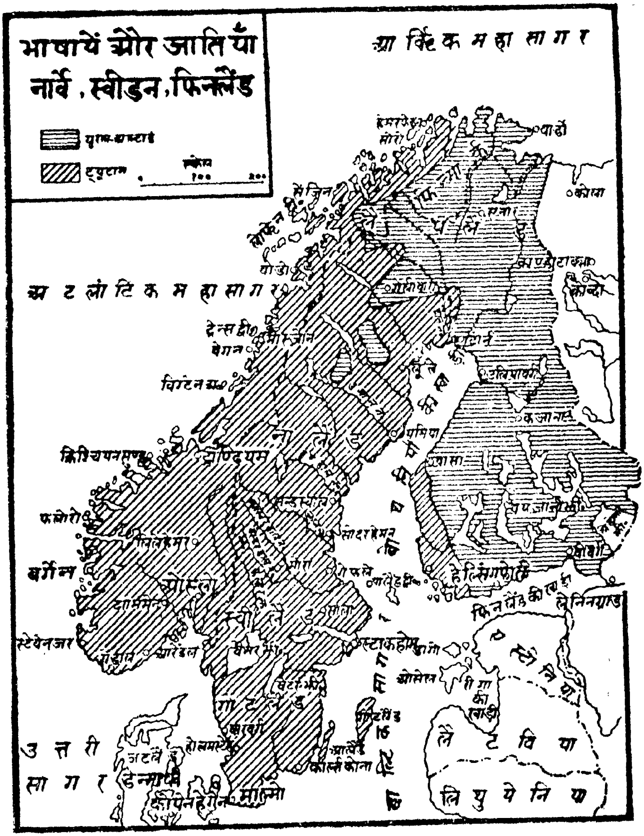
स्वेडिश निवासियों में शुद्ध ट्यूटानिक रक्त पाया जाता है। वह बड़े सरल स्वभाव के होते हैं। स्वीडन



के अधिक भीतरी भाग में अब भी लोग प्राचीन ढंग के



वस्त्र धारण करते हैं। कुछ भाग में यूरल अल्टाई जाति के लोग मिलते हैं।



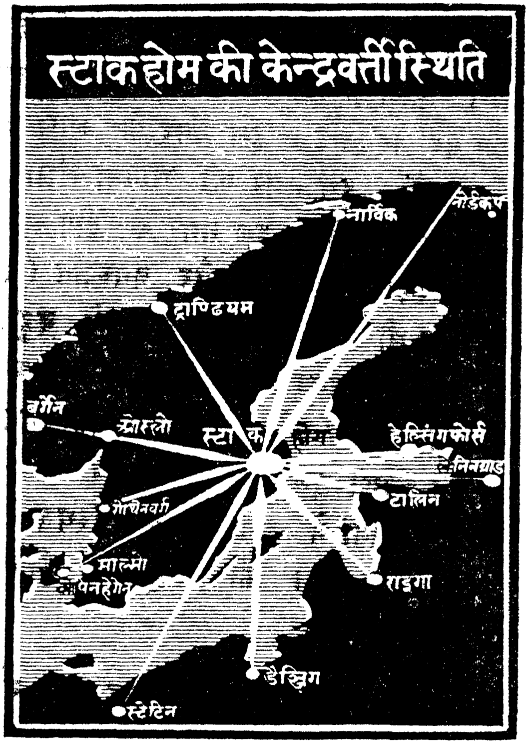


स्टाकहोम

स्टाकहोम नगर स्वेडन की राजधानी है। यह नगर मलरेन झील के बाहरी और बाल्टिक सागर की एक खाड़ी पर स्थित है। इस नगर के आस पास कई छोटे छोटे द्वीप हैं। इस नगर की गणना संसार के अत्यन्त सुन्दर नगरों में है। इस नगर के द्वीप समूह, जलमार्ग, इसकी पथरीली बनावट और बनस्पति (जिसमें कोण-धारी वृक्ष भी हैं) नगर की छटा को बहुत अलौकिक बना देते हैं। नगर में धूप छांह होने के कारण नगर के दृश्यों की शोभा और अधिक बढ़ जाती है। ग्रीष्म काल में इसकी सुन्दरता बहुत सुन्दर हो जाती है। इस नगर की सीमा में अनोखे भवन स्थित हैं और प्राचीन ऐतिहासिक भवन की आधुनिक शिल्पकला देखने योग्य है।

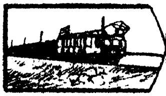
एक हजार वर्ष पहले भी यह नगर मौजूद था। उस समय इस नगर के निवासी उन दो द्वीपों में रहते थे जिसे अब "पुलों के बीच का नगर" तथा "निडर होसेन" कहते हैं। उस समय सबसे अधिक

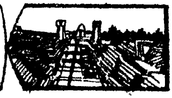
चौड़े जल मार्ग थे। इस नगर के स्टाकहोम नाम पड़ने



स्टाकहोम की केन्द्रवर्ती स्थिति

के दो कारण हैं। (१) नगर की रक्षा के लिये लकड़ी और दूसरे सामानों के स्टाक (ढेर) इकट्ठा कर उन्हें





जंजीर से जोड़ दिया जाता था इसलिये इसका नाम स्टाक-होम हुआ। दूसरा कारण यह है कि स्टाकों (ढेरों) के ऊपर के पुल प्राचीन नगर से जोड़ दिये गये इसलिये स्टाक के नाम पर नगर का नाम भी स्टाकहोम पड़ा। स्टाकहोम में बारहवीं सदी के अन्त में एक किला स्थोनियन मल्लाहों से नगर की रक्षा करने के लिये बनाया गया था।

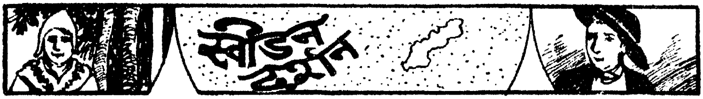
स्टाकहोम नगर का राजनैतिक इतिहास स्वीडन के इतिहास से घनिष्ट सम्बन्ध रखता है। जिससे किसी राजा का भी स्टाकहोम पर अधिकार होता था उसी के अधिकार में समस्त स्वीडन देश रहता था। १५२० ई० में डेनमार्क के राजा क्रिश्चियन द्वितीय ने जब स्वीडन पर विजय प्राप्त कर ली तो उसने स्वीडन के प्रधान नेताओं को कत्ल करवा दिया और उसके बाद वह राज्य-मुकुट अपने सिर पर रखने को था परन्तु स्टाकहोम उसके अधिकार में न था। उस समय गस्टवस वासा स्वेडिश लोगों का प्रधान नेता बना। वह अपने मित्रों के साथ स्टाकहोम पहुँचा। उसने शत्रु को निकाल बाहर किया और स्वीडन का राजा बन बैठा। गस्टवस वासा आधुनिक स्वीडन का बनाने वाला माना जाता है।

गस्टवस द्वितीय अडोलफ के समय में नगर का महत्व बहुत बढ़ गया और वहाँ पर बड़े बड़े विशाल महल बन गये। प्राचीन राज महल १६६७ ई० में अग्नि काण्ड में नष्ट हो गया था। अठारहवीं सदी में नवीन राज-महल बनाया गया। यह महल स्टाकहोम नगर के मध्यवर्ती भाग में है। इस महल की शिल्प-कला दर्शनीय है।

सत्रहवीं सदी और अठारहवीं सदी में इस नगर के आर्थिक जीवन को सुखमय बनाने के लिये परिश्रम किया गया था। वर्तमान समय में भी नगर को माला-माल बनाने के लिये सराहनीय कार्य किये गये हैं। बाल्टिक सागर के व्यापार में स्टाकहोम के स्वतंत्र बन्दरगाह का बड़ा महत्व है। स्टाकहोम की जन-संख्या ५ लाख है।

दर्शनीय दृश्य

ग्रैण्ड (बड़ा) होटल और नैशनलगैलरी को पार करने के बाद निब्रोप्लान की ओर घूमकर जाने में राएच ड्रामाटिक थियेटर (स्वांग घर) मिलता है। यह स्वेत संगमरमर का बना है। यह स्वांगघर १६०८ ई० में



बनवाया गया है। स्ट्रांडवेजेन से डिप्लोमैटूस्टाडेन तक नगर के धनी लोगों के घर बने हैं। इसी भाग में एक अँग्रेज़ी गिरजा घर बना हुआ है। इसके आगे स्टाकहोम का डिप्लोमेटिक टाउन (कूटनीतिज्ञ कस्बा) है। स्वी, गोटा लाइफ गार्ड और इँगेल्ब्रेक्ट चर्च आदि आधुनिक स्वेडिश शिल्पकला के सुन्दर भवन हैं। इन स्थानों से आगे बढ़ने पर हमें राए टेकनिकल इंस्टीट्यूट और स्टाडियम मिलता है। यह स्टाडियम १६१२ ई० में ओलम्पिक खेलों के लिये बनाया गया था। जैसे ही हम स्टूरेगाटन से नीचे की ओर घूम कर आते हैं हमें दाहिनी ओर हुम्लेगार्डेन पार्क मिलता है। इस पार्क में राएल लाइब्रेरी (सम्राट का पुस्तकालय) और लिनेऊस की मूर्ति है। स्ट्रेप्लान पर स्टाकहोम का सबसे प्रसिद्ध बाज़ार स्थित है। इसी बाज़ार में दो कुँग्स्टोर्नेन भवन स्थित हैं जो १७ मंज़िले बने हैं। इसी सड़क पर नगर का नया नाच तथा संगीत घर है। संगीत घर के खम्भे होटोर्नेट की ओर हैं। होटोर्नेट पुराना बाजार है। यह बाज़ार फल, फूल और साग-तरकारी के व्यापार का केन्द्र है।

कुंग्स्ब्रान को पार करने के पश्चात् स्टाकहोम नगर

का पश्चिमी भाग मिलता है इस भाग में नगर की म्युनिस्पैलिटी के प्रसिद्ध भवन बने हैं। यह भाग कुंग्सहोमन नामक द्वीप पर स्थित है। कोर्टहाउस और पुलीस हेड क्वाटर्स के भवन की कारीगरी देखने योग्य है। स्टाकहोम का टाउन हाल भवन योरुप के प्रसिद्ध तथा अनोखे भवनों में गिना जाता है। इस टाउन हाल का उद्घाटन १६२३ ई० में हुआ था। इसके बनवाने में १,८०,००,००० क्रोनर लगे थे। टाउन हाल में और आगे बढ़ने पर एक सुन्दर बाग है। स्टाकहोम के दर्शन करने वाले इस वाटिका में अपना कुछ समय अवश्य खर्च करते हैं। वाटिका के आगे चलने पर स्टाडशुस्ब्रोन और वास्ब्रोन नामक पुल पार करने पड़ते हैं। पुलों के पार करने के बाद स्टाकहोम नगर का प्राचीन भाग आता है। यह भाग "दो पुलों के बीच का नगर" कहलाता है। यह भाग छोटे से द्वीप में स्थित है। यहीं पर स्वीडन के राजा के रहने के स्थान हैं।

यदि हम स्टाकहोम के ऊँचे स्थान से दक्षिण की ओर उतरें तो हमें स्टाकहोम बन्दरगाह और नगर के उत्तरी भाग का अच्छा दृश्य दिखाई पड़ता है।

रिदरहोम चर्च स्वीडन का एक प्रसिद्ध ऐतिहासिक स्थान है। इस स्थान पर स्वीडन के राजाओं की समाधि है। गस्टाव अडोल्फस द्वितीय और चार्ल्स चौदहवें की समाधि भी यहीं पर है। ड्राटिंगटान नामक सड़क पर बड़ी बड़ी दूकानें हैं और प्रत्येक भाँति का सामान मिल सकता है। इसी सड़क पर पाल यू० बर्गस्ट्रोम की बड़ी दूकान, सम्राट का टेक्निकल इंस्टीटयूट, स्टाकहोम का विश्व-विद्यालय तथा प्राचीन अब्जर्वेट्री आदि प्रसिद्ध भवन स्थित हैं। ओडेनप्लान नामक स्थान पर गस्टाव वासा गिरजाघर है। ओडेनगटन की ओर चलने पर बिओकेमिकल संस्था है। स्टाकहोम की न्यू लायब्रेरी (नया पुस्तकालय) भी देखने योग्य हैं।

हागा पार्क को पार करने के बाद यूलिरक्स्डाल नामक दुर्ग है। इस किले में स्वीडन के बड़े राजकुमार रहा करते हैं। किले के आगे जाने पर सिटी आफ साइंस (विज्ञान का नगर) नामक मुहल्ला मिलता है। इस भाग में बहुत से वैज्ञानिक भवन तथा संस्थायें हैं जिनमें प्राकृतिक इतिहास का कौतुकालय सबसे अधिक सुन्दर तथा बड़ा है। स्वीडन के राजा का टेनिस क्लब

जुरगार्डन पार्क, उत्तरी कौतुकालय, स्कान्सेन का कौतुकालय तथा राज़ेराडल महल आदि भी देखने योग्य स्थान हैं।

स्कान्सेन कौतुकालय

यह संसार का सबसे सुन्दर तथा खुला कौतुकालय है। यह एक पहाड़ी पर स्थित है। यहाँ से स्टाकहोम का समस्त नगर दिखाई पड़ता है। इसकी नींव आर्थर हजेलियस ने डाली थी। उसने अपना समस्त जीवन प्राचीन वस्तुओं के संग्रह में व्यतीत किया था।

इस कौतुकालय में स्वीडन की प्राचीन कारीगरी के भवन लाकर रक्खे गये हैं। यहां पर एक जूलाजिकल गार्डन भी है।

थील्स गैलरी

एओलसकूले के ऊपर स्टाकहोम बन्दरगाह और वार्टन फियोर्ड के बीच में थील की गैलरी है। यह गैलरी बीसवीं सदी के आरम्भ में बनी है। इसे एर्नेस्ट थील ने बनवाया था। वह एक बैंक का संचालक था और उसे कला का बड़ा शौक था। उसने गैलरी में कलाकारों और



चित्रकारों की बनाई हुई सुन्दर वस्तुओं का संग्रह किया है। यहां पर नार्वे और स्वीडन के प्रसिद्ध चित्रकारों तथा शिल्पकारों की बनाई वस्तुयें रक्खी हैं। गैलरी सुन्दर तस्वीरों कालीनों, दरियों तथा चित्रों से खूब सजाई गई हैं।

१८२५ ई० में इसे स्वीडिश जाति ने खरीद लिया। तब से इसका प्रबन्ध एक बोर्ड के हाथ में है जिसकी नियुक्ति स्वीडन के सम्राट द्वारा होती है। यह गैलरी सर्व साधारण के लिये बुधवार और रविवार को खुली रहती है।

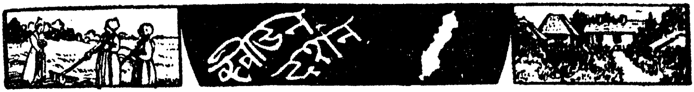
ड्रार्थिगहोम

यह महल स्टाकहोम के समीप स्थित है। यहां पर पतझड़ तथा बसंत ऋतु में राजघराने के लोग रहते हैं। इस महल को १६६२ और १६८६ ई० के बीच में रानी डोवागेर देडविंग एल्योनोर ने बनवाया था। इस महल में कई एक कमरे हैं जिनमें डोवागेर रानी का शयन स्थान दो गैलरियां स्टेट हाल आदि प्रसिद्ध हैं। स्टाक के स्वांग तथा नाच घर भी बहुत प्रसिद्ध हैं। डोट्टनि-

घोम का स्वांगघर १७६६ ई० में बना था। गस्टवस तीसरे के समय में यह स्वांग घर बहुत प्रसिद्ध था।

सम्राट के नाचघर तथा विदेशी दफ्तर के बीच में जो बाजार है वहां से राज महल अच्छी तरह दिखाई पड़ता है। ड्रोट्टनिंघोम का राज महल लोवो द्वीप पर है। वहां स्वीडन के राजा इस महल में पतझड़ और वसंत ऋतु में रहते हैं। इस महल में चित्रकला तथा दूसरी कारीगरी की वस्तुओं का संग्रह है।

राजमहल से कुछ दूर पर स्वीडन का पुराना स्वांग (ओल्ड थियेटर) है। संसार में यह केवल एक ही स्वांग घर है जहां अठारहवीं सदी के सामान अब तक रक्खे हुये हैं। स्वांग घर से मिले हुये दूसरे कमरों में गस्टवस तीसरे के समय के सामान रक्खे हैं।



मोटरबोट द्वारा स्टाकहोम का भ्रमण

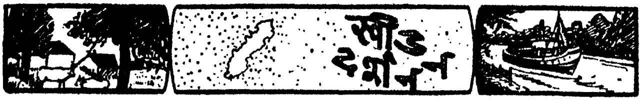
जो लोग स्टाक होम देखने जाते हैं वह अवश्य ही मोटर बोट द्वारा स्टाकहोम बन्दरगाह की यात्रा करते हैं। नाव पर सवार हम सबसे पहले स्टांड वाजेन के समानान्तर यात्रा करते हैं उसके बाद डिप्लोमैटस्टोडन आदि स्थानों को पार करके उस स्थान पर जाते हैं जिसके दाहिनी ओर जुरगार्डन तथा स्कान्सेन आदि स्थान मिलते हैं। उसके बाद और दूसरे स्थानों को पार करते हुये हमारी नाव स्टाक होम बन्दरगाह पर पहुंचती है। बीच में यूगेन राजकुमार का महल तथा हम्मरवीलेडेन आदि स्थान छूट जाते हैं। (यह मार्ग जिसमें आर्स्टास्जोन भी शामिल हैं) समुद्र को मलेरन झील से मिलाता है। अर्स्टाजीन झील को पार करने के लिये स्वीडन का सबसे लम्बा रेलवेपुल है। इस पुल की लम्बाई ७५९ मिटर है।

उसके बाद हमारी नाव एसिंगे द्वीप होकर जाती है। इसके बाद हमारी नाव कुँगशोल्मेन तथा स्टाक होम के पश्चिमी भाग के मध्य होकर जाती है। पास ही कार्लबर्ग

का किला छूट जाता है। किले के बाद क्लात्रिकेन की खाड़ी पड़ती है। खाड़ी के बाद टाउन हाल तथा रिद्दर-होल्मेन आदि स्थान पड़ते हैं।

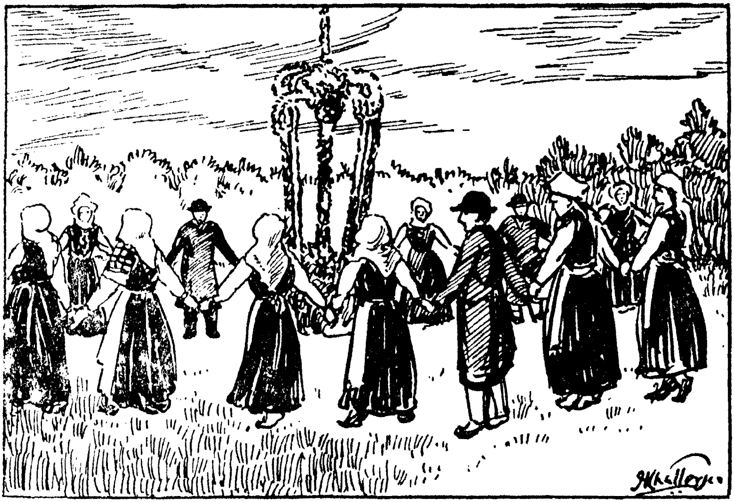
अन्त में हमारी नाव नार्सट्रोम होकर ट्रावेल ब्यूरो के बाहर तट पर आ जाती है। लौटते समय हमारी नाव का मार्ग राजमहल तथा पार्लियामेंट के घरों के मध्य में होकर जाता है।





साल्टस्जोवेडन

यह स्थान स्टाकहोम नगर से मिला हुआ एक प्रसिद्ध मुहल्ला है। इसमें स्टाकहोम के नागरिक



ग्रीष्म ऋतु के शुभागमन के समय का नाच। यह त्योहार स्वीडन में बड़े दिन के त्योहार के अलावा सब से बड़ा माना जाता है।

निवास करते तथा सैर सपाटे के लिये आते जाते हैं। बहुत से लोग यहाँ पर समस्त वर्ष रहते हैं अन्य लोग केवल गर्मी के दिनों में ही निवास करने जाते हैं। यह

स्थान बहुत ही रमणीक है। यहां की धरती अपने दृश्यों तथा द्वीपों की सुन्दरता के लिये प्रसिद्ध है। यहां पर अच्छे अच्छे होटल तथा भोजनालय हैं। यहां बड़ा सैनिटोरियम है जहाँ लोग अपनी चिकित्सा कराने जाते हैं। इस स्थान पर फरवरी और मार्च महीनों में प्रत्येक भाँति के जाड़े के खेल कूद होते हैं। यहां का नेग्लिजे-विकेन नामक गिरजाघर प्रसिद्ध है। इस गिरजाघर का द्वार ताँबे का बना हुआ है। ग्रीष्मकाल के आरम्भ में बड़ा उत्सव मनाया जाता है।

कार्लटन होटल

यह होटल १९२७ ई० में बना है। और आधुनिक सभ्यता के अनुसार सजाया गया है। स्टाकहोम के केन्द्रीय स्टेशन के समीप दूकानों के बीच में स्थित है। इसमें १५० कमरे हैं जिसमें गरम और सर्द पानी बहा करते हैं। प्रत्येक कमरे में टेलीफोन लगा है। इस होटल के कई कमरों में अलग अलग स्नान गृह हैं।

इसका वर्णन बहुत विस्तृत है। इसमें एक पुस्तकालय भी है। इस होटल में घंटे के स्थान में बिजली की बत्ती का संकेत खामोश रहने के लिये किया जाता है।



स्टाकहोम के द्वीप

वैक्सहोल्म नामक टाउन हम स्टाकहोम से एक घंटे की यात्रा में पहुंच जाते हैं। पुराने किले के सामने एक बहुत अच्छा रेस्टारेंट है। यह द्वीप समूह अपनी सुन्दरता में संसार में सबसे बढ़ कर है। इन द्वीपों के चारों ओर समुद्र और जल संयोजक है।

ट्रावेल ब्यूरो के घाट के समीप से मार्ग स्टाकहोम के केन्द्रीय बन्दरगाह के बीच होकर जाता है। यहीं पर एक बड़ा पुल है जिसके नीचे से स्टीमर आदि जाते हैं।

ट्राल हेवट और लिंडल सुन्डेर द्वीपों में किनारे किनारे सुन्दर भवन बने हैं। उसके बाद वार्मडोन द्वीप के विंडो स्ट्रीमर के मार्ग से पार करके कनहोल्म्सजार्डेन जाते हैं। उसके बाद स्टोमा नहर होकर कोल्स्ट्राम पहुँचते हैं। इस स्थान पर मार्ग इतना संकरा हो जाता है कि जिसे देख कर बड़ा आश्चर्य होता है कि वहां बड़े स्ट्रीमर किस प्रकार पार करते हैं।

कोल्ट्रोम को पार करके बेगेन्स्फजार्डेन पहुँचते हैं।

इस स्थान से माल्ट्सजोबाडेन अच्छी तरह दिखाई पड़ता है।

आगे बढ़ने पर स्टेकर से बांयें ओर घूमते हैं। यहां पर जल मार्ग बहुत संकरा है। इन संकरा जलमार्गों को लेनस्टं और स्कुरूसुंडेट कहते हैं। स्कुरूसुंडेट के आर पार स्वीडन का सबसे बड़ा तथा सुन्दर पुल बना है। यह पुल २८४ मिटर लम्बा है। पुल की सड़क समुद्र के धरातल से ३२ मिटर की ऊँचाई पर है। यह मार्ग बड़ा सुन्दर है। मार्ग के किनारे किनारे सुन्दर घर तथा ग्रीष्म काल के रहने के लिये निवास स्थान बने हैं।

स्कुरूसुण्डेट के अन्त में पहुँचने से लिडिंगो साफ साफ दिखाई पड़ता है। उसके बाद वाईं ओर घूमकर फिर स्टाकहोम नगर वापस चले आते हैं।



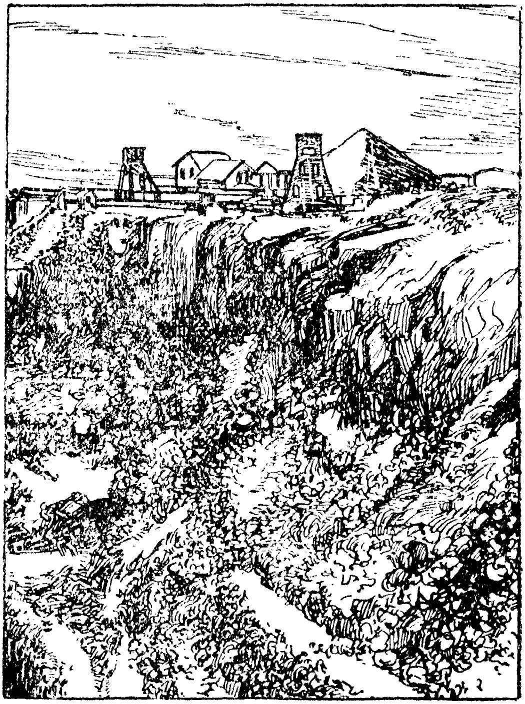
ग्रिप्सहोम की यात्रा

मोटर पर सवार होकर स्टाकहोम से प्राचीन नगर होकर सोडेरमाल्म हान्सतुल पहुँचते हैं। हान्सतुल पर एक बड़ा पुल है। पुल पार करने के बाद सोदरतेज्जे नामक छोटे नगर में पहुँचते हैं। इस नगर के केन्द्रीय भाग में सेनिटोरियम है। यहाँ नगर के बाहर समुद्र में लोग स्नान करते हैं। इस नगर से हम ग्रिप्सहोल्म पहुंचते हैं। यहां का किला देखने योग्य है। स्टाक होम को छोड़ने के दो घंटे बाद मैरीफ्रेड पहुंचते हैं। ग्रिप्सहोल्म का किला मलेरन झील पर स्थित है।

वर्तमान किले को गस्टवस वासा ने बनवाया था। इसके पहले इसी स्थान पर बोजानसन ग्रिप ने १४ वीं और पंद्रहवीं सदी में किला बनवाया था। किले में प्राचीन ऐतिहासिक वस्तुओं का संग्रह है। गस्टवस तीसरे के समय में इस किले में राज काज का काम होता था। आजकल यह किला कौतुकालय का काम देता है। इस किले में १६०० बड़ी बड़ी तस्वीरें हैं।

गोटलैण्ड और विस्बी

गोटलैण्ड स्वीडन का सब से बड़ा द्वीप है। यह चूने के पत्थर का द्वीप समुद्र के ऊपर उभरा हुआ है। इसका



स्वीडन की सबसे प्राचीन ताँबे की खान।

दृश्य बड़ा ही मनोहर है। इस द्वीप की राजधानी विस्बी



प्राचीन स्वेडिस कारीगर

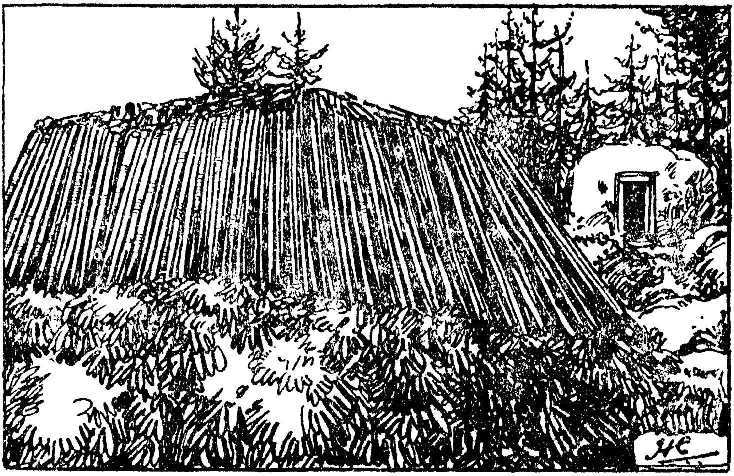
है। विस्बी नगर के चारों ओर एक बड़ी दीवार बनी

है। चहार दीवारी के भीतर प्राचीन गिरजाघर तथा इमारतें हैं। फालून की तांबे की खान से तांबा निकाला जा रहा है। इस खान का काम १२ मील तक फैला हुआ है और गहराई १,१५० फुट है। १७वीं सदी से अब तक इस खान से एक करोड़ ४० लाख टन तांबा निकाला गया है। तांबे से २८ मन सोना और ४२० मन चांदी निकली है।

गोथ लोगों के समय में विस्बी नगर व्यापार का केन्द्र बना हुआ था। ग्यारहवीं सदी में विस्बी हैंसियाटिक संस्था का एक प्रभुत्वशाली सदस्य था। १३६१ ई० में विस्बी नगर को डेन्मार्क के राजा वेल्डेमार अतेरदग ने लूटा था।

विस्बी नगर में ३७ दुर्ग तथा १६ गिरजाघर हैं। विस्बी नगर में गुलाब का फूल बहुत होता है। यह नगर "बर्बादी तथा गुलाबों" के नगर के नाम से प्रसिद्ध है। मध्य कालीन समय में गोटलेंड के निवासियों ने कला में बड़ी उन्नति की थी जिसका उदाहरण विस्बी के कौतुकालय में है। विस्बी में इस प्राचीन शिल्प कला के लगभग ६० गिरजाघर बने हैं। विस्बी नगर में आधुनिक

होटल तथा भोजनालय हैं। जुगार्न एक प्रसिद्ध घूमने का स्थान है। गोटलैंड में एक टूरिस्ट असोसियेशन (यात्रियों की संस्था) है जो यात्रियों की यात्रा की सहायक है। यह संस्था विस्बी में है। यात्रियों को सवारी का



स्वीडन के चारकोल तयार करने का प्राचीन ढंग।

प्रबन्ध किया जाता है और उसके साथ में एक मार्ग प्रदर्शक कर दिया जाता है जो कई प्रकार की भाषाएँ बोल सकता है।

देश दर्शन

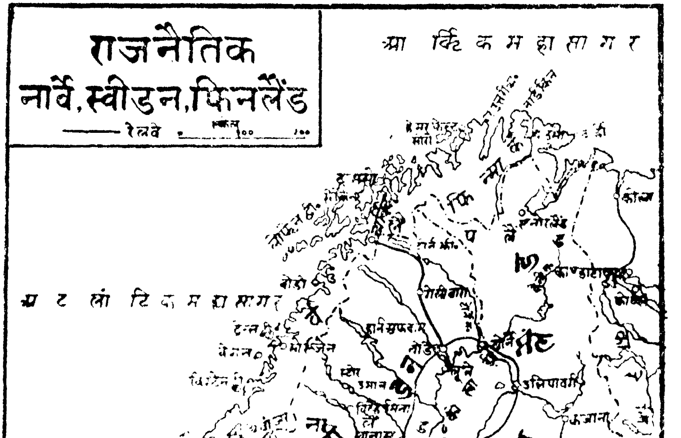
विस्वी नगर से जाकर कोल्मार का पुराना क़िला देखा जा सकता है। इस क़िले में ऐतिहासिक संग्रह है। कोलमार से ओलैंड द्वीप का एक दिन का मार्ग है। ओलैंड में बोघोला क़िले के खंडहर हैं। यहां पर प्राचीन ढँग से चारकोल तयार करने का रोज़गार होता है। पहले यह रोज़गार बहुत था। यह चारकोल लोहे के कारखानों में काम आता है।

स्काने या स्कैनिया

यह स्वीडन का सब से दक्षिणी प्रान्त है और योरुप से स्वीडन जाने वाले सभी मार्ग इस प्रान्त होकर जाते हैं। इस प्रान्त के दक्षिणी भाग में खुले मैदान, पहाड़ियां तथा चौड़ी लाइनें हैं। यहां का प्राचीन क़िला और राज-महल बनों के बीच में एक दूसरे से कुछ दूरी पर स्थित हैं। यहां पर कुछ सफेद गिरजाघर हैं। यहां के घर लकड़ी और ईंटों के बने हैं।

१६५८ ई० तक स्कैनिया डेनमार्क के अधिकार में था। स्कैनिया प्रान्त अपने सुन्दर दृश्यों तथा ऐतिहासिक वस्तुओं के लिये प्रसिद्ध है।

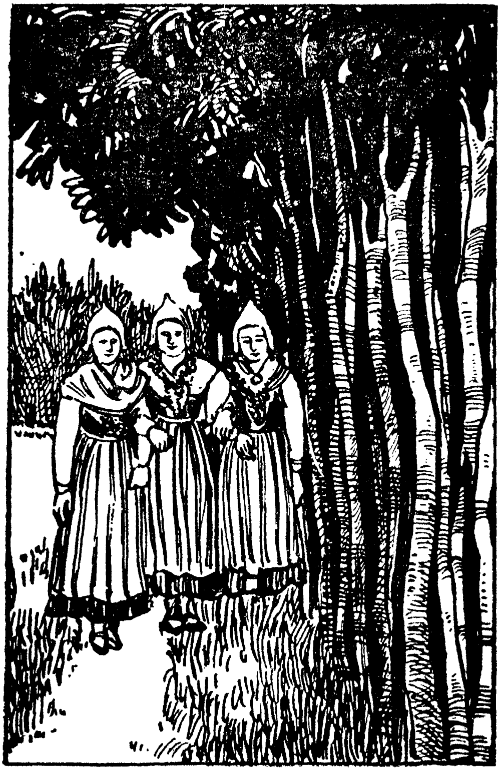
माल्मो स्कैनिया की राजधानी है। यह योरुप को जाने वाली रेलवे तथा हवाई लाइनों का जंकशन है। यहां एक प्राचीन क़िले का खंडहर है जिसमें बोथवेल स्काट की रानी महारानी मेरी का तीसरा पति इसी क़िले में गिरफ्तार रक्खा गया था। माल्मो से स्कैनिया की यात्रा का प्रबन्ध किया जाता है।


राजनैतिक
नार्वे, स्वीडन, फिनलैंड
रेलवे
आर्कटिक महासागर
अटलांटिक महासागर
बर्गेन
स्टाकहोम
लेनिनग्राड
उत्तरी सागर



लुन्द्

माल्मो से उत्तर की ओर लुन्द् नगर है। यहां पर



सनोवर के वृक्षों के बगल में स्वीडन की बालिकायें।

८८० वर्ष पुराना एक मठ है। यह मठ रोमन कला का बना है और इसमें मध्य कालीन घड़ी है जिसे बहुत ज्यादा यात्री देखने आते हैं। मठ में कुछ धब्बेदार अनोखे दर्पण भी हैं।

एस्ताड

मालमो से २ घंटे की यात्रा के बाद एस्ताद पहुँचा जा सकता है। इस नगर में पन्द्रहवीं सदी के मकानात तथा गलियां हैं। नगर के समीप ही कई मील लम्बा सनोवर का बन है। नगर में अच्छे होटल हैं। इस नगर के समीप ही कई पुराने क़िले हैं। ग्लाइमिंगेहुस नामक क़िला १४९९ ई० में बना था। यह अभी उसी दशा में खड़ा है।

हेल्सिंगबोर्ग

ओरेसुन्द के तट पर स्वीडन की ओर हेल्सिंगबोर्ग का नगर है। यह स्वीडन का एक बड़ा तथा सुन्दर नगर है। इस नगर में गरम धातु के सोते हैं जिन में लोग स्नान करते हैं और भाँति भांति की बीमारियों से

स्वस्थ होते हैं। साउन्ड के तट पर सोफीरो महल है जहां पर राजकुमार निवास करते हैं।

बास्तद

स्कैनिया की उत्तरी सीमा पर है। यह समुद्र के तट पर हवा खाने का एक अच्छा नगर है। होटेल स्काने की बाटिका अपनी शिल्प-कला तथा सुन्दरता के कारण देखने योग्य है। इसके पास ही मलेन एक नहाने का प्रसिद्ध स्थान है।

गोटा नहर

गोटा नहर स्वीडन में है। यह एक सामूहिक नाम है। इसमें मलेरन झील, सोदेर ताल्जे नहर, बाल्टिकसागर, गोटा नहर का पूर्वी भाग, वेटर्न और वेनर्न झील तथा इन दोनों के बीच की नहर, ट्रालहाटन नहर और गोट नदी शामिल है।

इस नहर का सबसे ऊपरी भाग समुद्र तल से १०० गज ऊँचा है। यह बनावटी नदी लगभग ५० मील लम्बी है। शेष भाग में नदियाँ और झीलें हैं। इस नहर में

कुल ७० झील हैं। कहीं कहीं पर यह झीलें बड़ी समीप हैं और सीढ़ी की भांति प्रतीत होती हैं। नहर यात्रियों की यात्रा के लिये प्रसिद्ध है। यह नहर लगभग १०० वर्ष पहले तयार हुई थी। नहर की चौड़ाई बहुत कम है इस लिये इसमें चलने वाले स्टीमर छोटे तथा आनन्द-दायक होते हैं। इस नहर द्वारा यात्रा करने में स्वीडन के सर्वोत्तम दृश्यों की छटा देखने में आती है। तटीय वृक्षों की टहनियां स्टीमर के तख्ते पर खड़े मनुष्य के शरीर से रगड़ती चलती हैं।

जोनकोपिंग होकर यात्रा करने में यात्री नहर के पूर्वी भाग होकर जाते हैं। उन्हें वटेरन झील के दक्षिणी भाग होकर यात्रा करनी पड़ती है। वटेरन के दक्षिणी भाग में जोनकोमिंग का दियासलाई का बड़ा कारखाना स्थित है। यात्रा के समय लिंकोपिंग वाडस्टेना, ट्राल्हाटन आदि स्थानों का भ्रमण करना भी उपयोगी है।



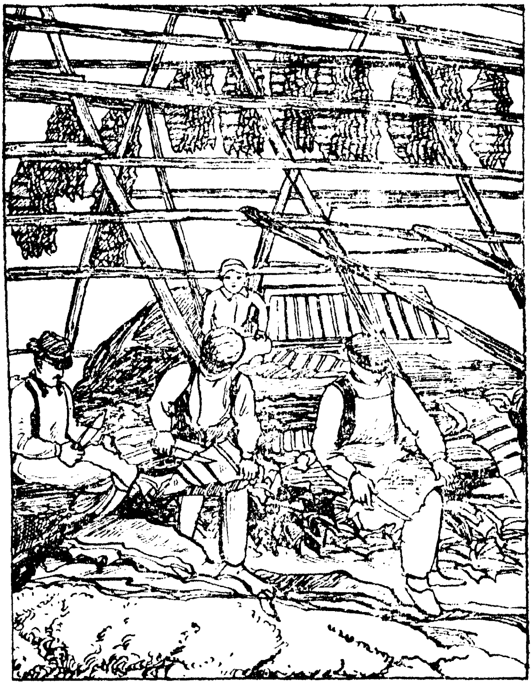
वास्टकुस्टेन (पश्चिमी तट)

वास्टकुस्टेन स्वीडन के पश्चिमी तट को कहते हैं। यह तट कटेगट और स्कैगर रू के साथ साथ स्कैनिया की उत्तरी सीमा से नार्वे की सीमा तक चला गया है। इस तट पर मछली मारने तथा उसे सुखाकर बाहर भेजने का काम होता है।

गोथेन बर्ग

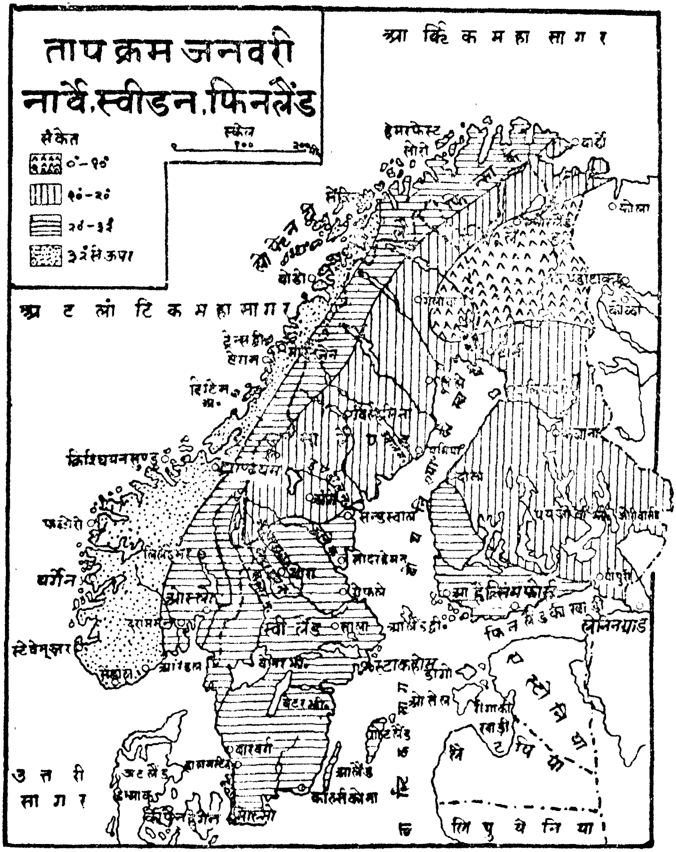
पश्चिमी तट पर बन्दरगाह तथा एक बड़ा नगर है। यह स्वीडन का दूसरा बड़ा नगर है और पश्चिमी तट की रेलगाड़ियों का जंकशन है। यह नगर गोट अल्व के मुहाने के समीप स्थित है। इसके पास ही पहाड़ी समुद्र के अन्दर कई स्थानों पर उभरी हुई है जिससे छोटे छोटे द्वीप बन गये हैं। इस नगर का मध्यवर्ती भाग सत्रहवीं सदी में अडोल्फस द्वितीय के समय में बनाया गया था। उस समय इस नगर में बहुत सी नहरें बनाई गई थीं जो अब भर गई हैं। इस बन्दरगाह पर बहुत सी जहाजी लाइनों के जहाज आकर रुकते हैं। इस बन्दरगाह पर जहाजों की भीड़ लगी रहती है।

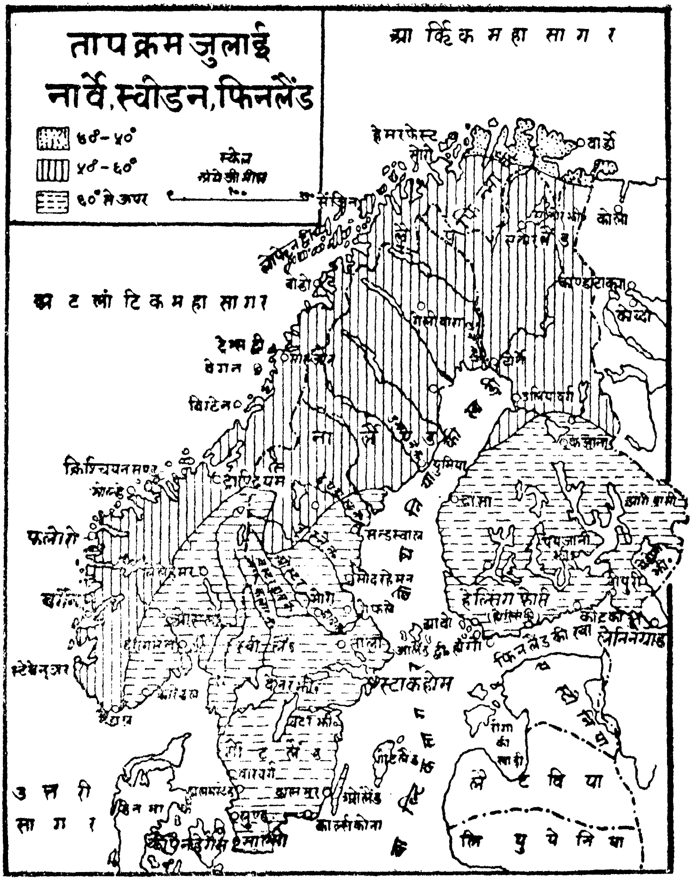
यह नगर सभ्यता तथा कला का केन्द्र है। यहां पर कला सम्बन्धी अनेक संस्थायें हैं। इनमें म्यूजियम आफ



सूस्ती 'किलव फिस्क' (मछली के ऊपर से चरबी का हटाया जाना)

आर्ट्स एण्ड क्रैफ्ट और एथनो-ग्राफिकल म्यूज़ियम


तापक्रम जनवरी
नार्वे. स्वीडन. फिनलैंड
संकेत
स्केल
आर्कटिक महासागर
अटलांटिक महासागर
उत्तरी सागर
बर्गेन
स्टेवेन्जर
हेमरफेस्ट
स्टाकहोम
स्वीडन
लेनिनग्राड
लिथुयेनिया


ताप क्रम जुलाई
नार्वे, स्वीडन, फिनलैंड
६०° से ऊपर
आर्क्टिक महासागर
अटलांटिक महासागर
हेमरफेस्ट
वार्डो
कोला
बोडो
नार्वे
स्टाकहोम
हेल्सिंगफोर्स
लेनिनग्राड
फिनलैंड की खाड़ी
लेटविया
लिथुएनिया
उत्तरी सागर
कार्लस्कोना
स्टेवेन्जर

आदि सर्व प्रसिद्ध हैं। इस नगर का स्लोटस्कोजेन नामक पार्क योरुप के अति सुन्दर पार्क में से था।

पास ही बन्दरगाह के मुहाने पर लैंजड्राग और साल्थोल्मेन नामक स्थान हैं जहां गरम तथा शीतल पानी नहाने के लिये मिलता है। यहां से होवास रेल द्वारा जाया जा सकता है। सारो भी रेल द्वारा पहुँचा जा सकता है। अन्तर्राष्ट्रीय टेनिस के खेल होते हैं।

देश दर्शन

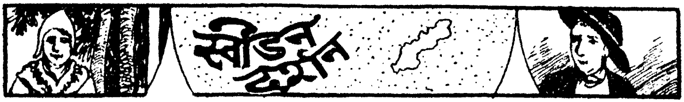
हालैण्ड

स्कैनिया और गोथेनबर्ग के बीच का प्रान्त हालैंड कहलाता है। इस प्रान्त का अधिकांश भाग उपजाऊ



आलू की फसल स्वीडन की मुख्य फसल है।

धरती का बना है। हालैण्ड प्रान्त में कुछ नदियां बहती हैं जिनमें रोहू (साल्मन) मछली बहुत पाई जाती है। हाम्स्टाडे नामक स्थान पर यह मछली धुँएँ में तयार की



जाता है और बहुत ही स्वादिष्ट पदार्थ मानी जाती है। इस प्रान्त में आलू की अच्छी उपज होती है।

टीलोसन्द

यह नगर हाम्स्टाड से लगभग ६ मील पश्चिम की ओर है। यह समुद्र के तट पर सैर करने वालों के लिये अच्छा स्थान है इसी से यह नगर अपने नमक के ढेरों तथा होटलों के लिये प्रसिद्ध हो रहा है। इस प्रान्त का उत्तरी भाग दक्षिणी भाग से बिल्कुल भिन्न है। इस तट की ऊँची चट्टानें बहुत कटी फटी है।

वरबर्ग

यह नहाने का एक मुख्य स्थान है। इस स्थान पर स्नान करने से कई रोग अच्छे हो जाते हैं। यहां पर एक किला है जिसमें अब कौतुकालय है।

बोहस्लान

गोथेन वर्ग और नार्वे के तट का मध्यवर्ती भाग बोहूस्लान प्रान्त में शामिल है। यह भाग बड़ा कटा फटा है और इसमें बहुत सी छोटी छोटी खाड़ियां तथा अंतरीप

हैं। किसी समय में यहां से इँगलैंड और फ्रांस को जहाज आया जाया करते थे। इस भाग में हजारों छोटे छोटे द्वीप हैं जो उजाड़ तथा पहाड़ी हैं परन्तु प्रातः काल और संध्या काल इसकी सुन्दरता बड़ी रमणीक हो जाती है। इस प्रान्त के निवासी उत्तरी सागर और अटलांटिक सागर में मछली मारा करते हैं। इस भाग के समुद्र का पानी स्वीडन के और दूसरे भागों से अधिक खारी है। तट पर मछली मारने वाले जो गांव बसे हैं वहां लोग गरमी की ऋतु में आकर ठहरते तथा वायुसेवन करते हैं।

दलेकार्लिया

ऐतिहासिक दृष्टि से डलेकार्लिया स्वीडन का एक ज़रूरी प्रान्त है। इस प्रान्त में परिश्रमी, मज़बूत और स्वतंत्र पुजारी लोग निवास करते हैं। यहां के निवासियों ने स्वीडन के इतिहास में एक प्रधान भाग लिया है। यहां के किसानों और मज़दूरों की संस्कृति पुरानी है वह पुराने ढंग के कपड़े अब भी पहिनते हैं।



स्त्रियाँ प्राचीन ढंग के वस्त्रों का प्रयोग अधिक करती हैं। यहां पुराने ढंग से सूत तथा कपड़ा तयार किया जाता है।

इस प्रान्त की मुख्य झील सिलजान है। इस झील के चारों ओर वनों से ढके पर्वत हैं जो दूर ही से नीले



टकुआ और चरखी स्वीडन का मुख्य घरेलू रोज़गार है।

रंग के दिखाई पड़ते हैं। झील के तट पर प्राचीन गांव और सफेद गिरजाघर कहीं कहीं पर हैं। जो लोग एक बार इस प्रदेश का भ्रमण करते हैं वह इसकी याद सदैव करते हैं।

वार्मलैण्ड

यह प्रान्त अपने साहित्य के कारण अन्तर्राष्ट्रीय जगत में प्रसिद्ध हो गया है। गोस्टा बर्लिङ्ग इस प्रान्त के साहित्य की एक अनोखी कहानी है जिसका अनुवाद कई भाषाओं में हो चुका है। इस कहानी का लेखक सेल्मा लेग लोफ है। इस प्रान्त के पूर्वी भाग में लोहे की खानें हैं। इस प्रान्त में लोहे का रोज़गार अधिक होता है। फ्रोक्सडाल घाटी का लोहे का कारखाना बहुत प्रसिद्ध है। अब यहां पर लकड़ी का रोज़गार अधिक होता है। फिर भी लोग पुराने स्थानों का भ्रमण करने के लिये आते हैं।

फ्रीक्सडाल की घाटी पहाड़ियों, वनों और झीलों से घिरी है। इस प्रान्त की राजधानी कार्लसटाड है। इस नगर में एक बड़ा कौतुकालय (म्यूज़ियम) है। इस नगर से समीप वर्ती स्थानों के भ्रमण का अच्छा प्रबंध किया जा सकता है।

नारलैण्ड

यह स्वीडन का सबसे उत्तरी तथा बड़ा ज़िला है



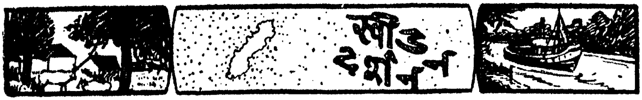
तिनकों के बने हुये 'पूल बक्स' खिलौने ।

यहां आबादी कम है। इस का क्षेत्रफल १,६३,३१० वर्ग मील है। इस प्रदेश का दृश्य बड़ा ही मनोहर है। यहां खनिज पदार्थ भी अधिक हैं। इस प्रान्त में



लेक्सैण्ड (स्वीडन) में घास लादने की गाड़ी।

जलोत्सव के समय तिनकों के खिलौने बनते हैं। स्टाकहोम से इस प्रान्त के सब से उत्तरी रेलवे स्टेशन की दूरी ६६० मील है। इस प्रान्त होकर जो रेलगाड़ियाँ (बिना रुके) जाती हैं उनमें प्रत्येक ३३ या ३६ घन्टे



के बाद यात्री को आराम की वस्तुएँ मिलती जाती हैं। यहाँ वर्षा अधिक होने से घास बहुत होती है जो काट कर सुखाई जाती है।

यह प्रान्त बोथनिया की खाड़ी की ओर ढालू है।



उत्तरी स्वीडन में पतली रोटियों का बनाया जाना।

मैदान में पहाड़ियां तथा बन हैं। बनों के बीच छोटी छोटी नदियों में झरने हैं। इन्हीं नदियों द्वारा बनों की लकड़ी बहा कर समुद्र तट पर लाई जाती है। यहाँ पर राई की रोटी बहुत पतली बनती है।

देश दर्शन

जाम्तलैण्ड

यह सुन्दर प्रान्त बरफ के पर्वत से ढका है। पहाड़ों पर बड़े बड़े प्रपात हैं। पहाड़ पर चढ़ने वालों के लिये



स्वीडन में बर्ष भर में चार बार रोटी बनाने का समय आता है।

एलडरेडो ऐसे बड़े मैदान हैं। इस प्रान्त का रेलगाड़ी द्वारा भ्रमण किया जाता है।

लैप लैंड

लैपलैंड आर्कटिक बृत्त में स्थित स्वीडन का सबसे उत्तरी प्रान्त है। यहां संसार की सबसे उत्तरी बिजली की रेल चलती है। इस प्रान्त में सदैव बरफ जमी रहती है। इसमें बड़े बड़े हिमागार ऊँचे विशाल पर्वत, बड़े बड़े प्रपात तथा पर्वतीय झीलें आदि बर्तमान हैं। केब्नेकैसी पर्वत ७ हज़ार फुट ऊँचा है। टोर्ने ट्रास्क की झील १२६ मील में फैली है। हर्सप्राङ्गेट का प्रपात २४० फुट ऊँचा है। इसकी लम्बाई २ मील है। स्टोरास्जोफालेर (बड़ा झील वाला प्रपात) १३० फुट ऊँचा और २३१० फुट चौड़ा है।

गर्मी के दिनों में कई हफ्तों तक सूर्यास्त नहीं होता है। आर्कटिक बृत्त के किसी भी उत्तरी स्थान से आधी रात का सूर्योदय दिखाई पड़ता है।

लैपलैंड संसार के सबसे अधिक धनी देशों में से है। वहां पृथ्वी के नीचे बहुत ज्यादा कोयला है। किरूना और गालीवारे आदि स्थानों में लोहे की पहाड़ियां हैं। किरूनावाड़ा पर्वत में अनुमान लगाया गया है कि ३००

गज़ की गहराई तक में ६ अरब ७२ करोड़ मन कच्चा लोहा निकलता है। इस के कुछ भाग में ७६ प्रतिशत शुद्ध लोहा है। पोर्जूस नामक स्थान में एक बड़ा बिजली घर है। जिस में ५० हज़ार अश्व शक्ति की बिजली खानों तथा रेलवे के लिये तयार की जाती है। एक नया बिजलीघर और तयार किया गया है। लैपलैंड के घूमने वाले लैप लोग डेरों में रहते हैं और अपने रेण्डियरों को साथ रखते हैं। लैपलैंड और जाम्तलैंड के निवासी मंगोल जाति के फिनो-उगरिक शाखा के वंशज हैं। यह लोग लैपलैंड की जन-संख्या के दसवें भाग के बराबर भी नहीं हैं।

अबिस्को का स्टेशन प्रधान स्वीडिश रेलवे लाइन तथा टॉर्न ट्रास्क झील पर स्थित है। यह यात्रियों के ठहरने का मुख्य स्थान है। इस स्थान से स्वडीन के पर्वतों तथा बर्फीले मैदानों की यात्रा को जाती है। दूसरे यात्रियों के ठहरने का स्टेशन साल्टो लौक्टा है। इसी के समीप हार्स प्रांग प्रपात स्थित है।
